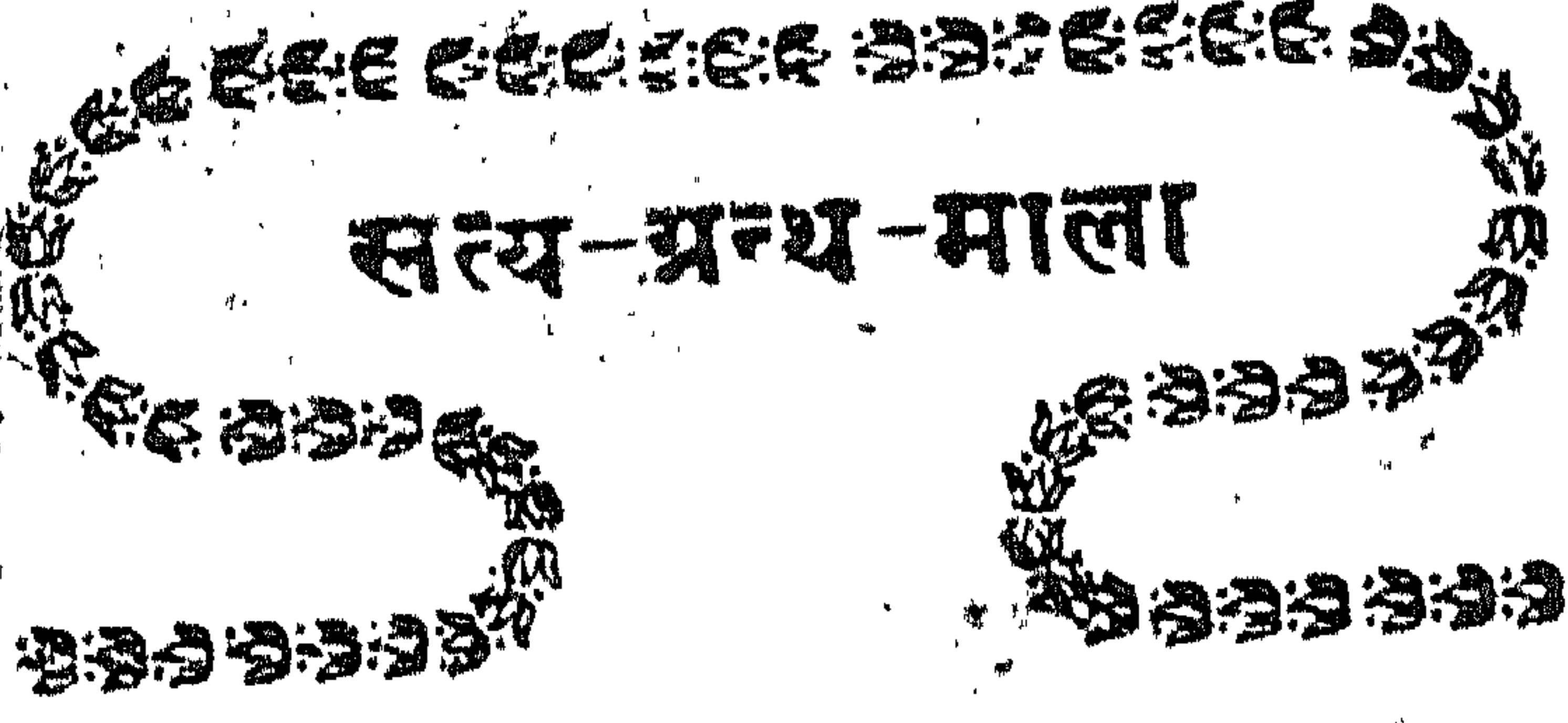


संख्या १४



HINDUSTANI ACADEMY
Hindi Section

Library No. 1788...

Date of Receipt. 18/12/28.

SHRI BUDDHA GITA



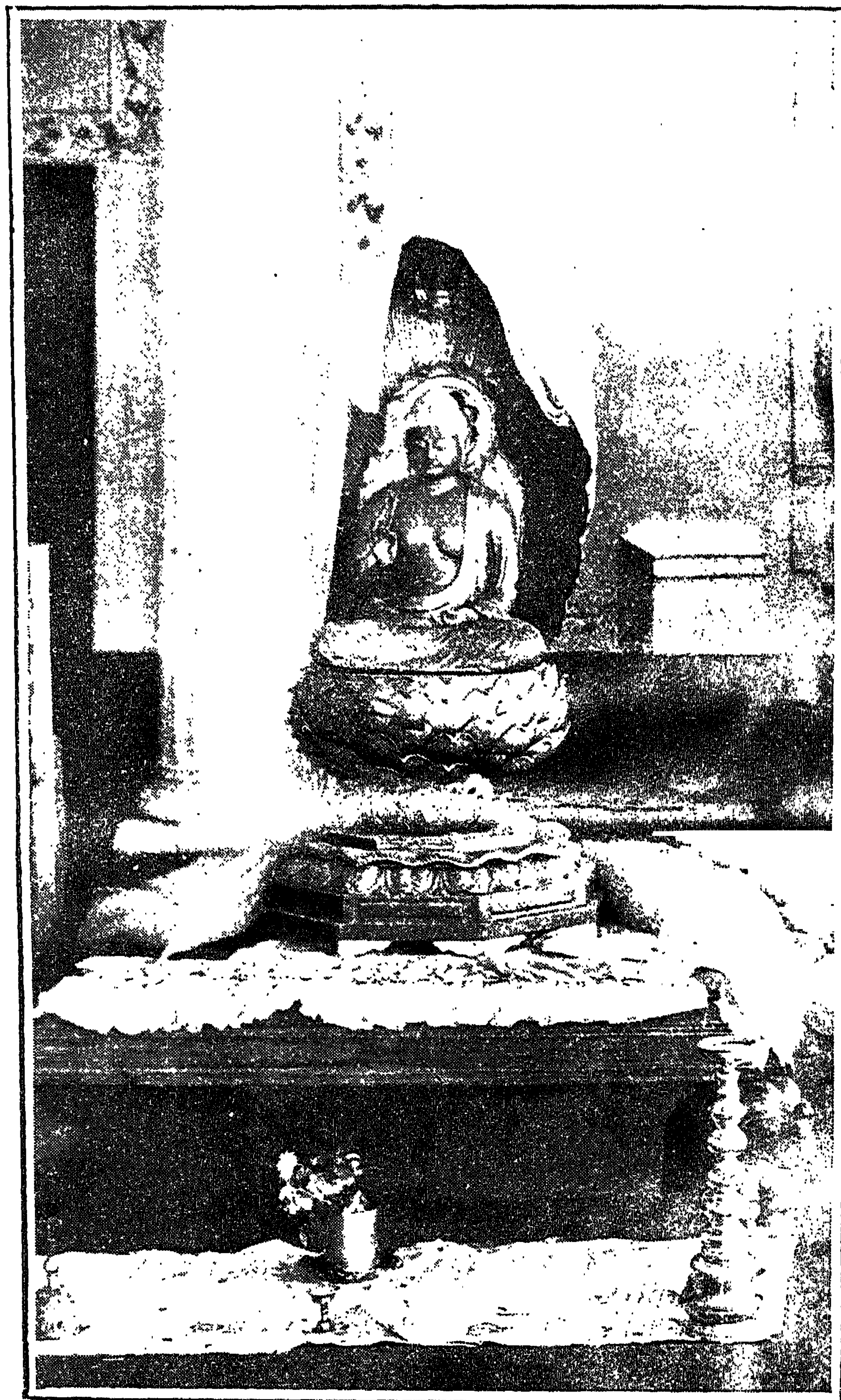
सत्यदेव परिव्राजक

हमारे बम्बई के सोल एजेंट—

मैनेजर

मैसर्स उर्मी एण्ड को०

लहेरी मैन्शन, सैंडहर्स्ट रोड, मुम्बई



करोड़ों आत्माओं को शान्ति प्रदान करनेवाले
भगवान् बुद्धदेव जी महाराज

सत्य-ग्रन्थ-माला सं० १४

श्रीबुद्ध गीता

अर्थात्

भगवान् बुद्ध के अमृतमय उपदेशों का संग्रह स्वरूप

“धम्मपद”

अनुवादक

श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक

रचयिता

संजीवनी बूटी, सत्यनिबन्धावली, मनुष्य के आधि-

कार, राजर्षिभीष्म, अमरीका पथ प्रदर्शक,

हमारी सदियों की गुलामी के

कारण, अमरीका भ्रमण,

शिक्षा का आदर्श,

इत्यादि

“बुद्धं शरणं गच्छामि ।

धर्मं शरणं गच्छामि ।

संघं शरणं गच्छामि ।”

प्रथम संस्करण

२०००

} All rights {
reserved {

मूल्य III)

प्रकाशक—

दी लवानियां पब्लिशिंग हाउस,

आगरा ।



मुद्रक—

मोहनलाल वैद

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, बेलनगंज-आगरा।

प्रकाशक का निवेदन

स्वामी श्रीसत्यदेव जी ने “सत्य-ग्रंथ-माला” की सीरीज को नये सिरे से चलाने का विचार किया है, और जो उद्देश्य “कर्मयोग-ग्रंथ-माला” निकालने का था उसका काम इसी ‘माला’ से ही लेने का है। हम भी इससे सहमत हैं। “सत्य-ग्रंथ-माला” का नाम हिन्दी-संसार में प्रसिद्ध है। इसके नाम पर जो पुस्तकें निकलेंगी वे शीघ्र ही लोक प्रिय हो जावेंगी।

दूसरा लाभ यह भी होगा कि “सत्य-ग्रंथ-माला” की पुस्तकों के प्रेमी जगह जगह न भटककर एक ही ठिकाने अर्थात् “दी लवानियां पब्लिशिंग हाउस, आगरा” से सब पुस्तकें पा सकेंगे क्योंकि “सत्य-ग्रंथ-माला आफिस” अब आगरे में आ गया है। इस ‘माला’ के बारह अंकों का कापी-राइट श्री स्वामी जी ने सन् १९१६ में जनसाधारण को दिया था। परन्तु इस माला के जो नये अंक “दी लवानियां पब्लिशिंग हाउस, आगरा” की तरफ से निकलेंगे, उन पर हमारे सिवाय किसी दूसरे का अधिकार नहीं है। और यदि कोई पुस्तक प्रकाशक इन नये अंकों को बिना हमारी अनुमति के छापेगा तो उसके विरुद्ध हमको अदालत में जाना पड़ेगा। इसकी सूचना देकर हम पुस्तक

प्रकाशकों को सावधान कर देना चाहते हैं, ताकि पीछे से किसीको शिकायत का मौका न रहे। 'हमारी सदियों की गुलामी के कारण' की चार हजार प्रतियां हमने छपवाई थीं, वे सब करीब करीब निकल चुकी हैं। अब जो उसका दूसरा संस्करण निकलेगा उसे नये रूप में उपयोगी सामग्री बटोर कर बहुत अच्छा अंक निकाला जायगा। वह "सत्य-ग्रन्थ-माला" का तेरहवां अंक होगा। इस तेरहवें अंक से इस माला की नई पुस्तकों का आरंभ समझना चाहिये और इनका कापी-राइट पब्लिक के लिये नहीं है।

हमारा विचार है कि "सत्य-ग्रन्थ-माला" के पुराने अंकों के नये सुन्दर और संशोधित संस्करण छापें। श्री स्वामी जी की पुस्तकों की मांग दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। उस मांग को पूरा करने का बीड़ा हमने उठाया है। एक एक अंक बिल्कुल नये ढंग से निकलेगा। यत्न किया जायगा कि पुस्तकें चिचों से सुशोभित हों। हम अपनी तरफ से जनता की सेवा करने में कोई कसर उठा न रखेंगे। हमें विश्वास है कि श्री स्वामी जी की पुस्तकों के प्रेमी समय समय पर अपनी उचित सम्मति देकर हमें बाधित करेंगे। देश-सेवा का काम परस्पर के सहयोग से ही हो सकता है। हमारी त्रुटियां आप हमें बतलाइये। हम आपके कृतज्ञ होकर उन त्रुटियों के दूर करने का यत्न करेंगे।

“श्रीबुद्ध गीता” को हम अपने देश-वासियों के सम्मुख रखते हैं । श्री स्वामी जी ‘भगवान् बुद्ध’ के अनन्य भक्त हैं । उन्होंने इस पुस्तक को अत्यंत उपयोगी बनाने का यत्न किया है । हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि “श्रीबुद्ध गीता” की लाखों प्रतियां भारतवर्ष के घर घर में फैल जाएं और उसके पवित्र उपदेशों के अनुसार लोक अपना चरित्र बनावे । इस संस्करण में जो त्रुटियां रह गई हैं उन्हें हम दूसरे संस्करण में अवश्य ठीक कर देंगे ।

अंत में हम अपने परमस्नेही श्री पंडित हरिशंकर जी शर्मा सम्पादक “आर्य्यमित्र” आगरा को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते, जिन्होंने इस पुस्तक के तैयार करने में हमारी बड़ी मदद की है । श्री स्वामी जी एक वर्ष के लिये यूरोप जा रहे हैं, उनकी अनुपस्थिति में हमें अपने मित्र श्री हरिशंकर जी का बड़ा भरोसा रहेगा ।

प्रार्थी—

मैनेजर,

दी लवानियां पब्लिशिंग हाउस,

आगरा, यू० पी०

सत्य-ग्रन्थ-माला

‘सत्य-ग्रन्थ-माला’ के पुराने प्रेमियों को मेरा ‘कर्म-योग ग्रन्थ-माला’ निकालने का विचार ठीक नहीं लगा। उनकी राय है कि ‘सत्य-ग्रन्थ-माला’ का ही पुनरुद्धार किया जाय और इसी के द्वारा संघ-शक्ति का प्रचार देश में किया जाय। वे कहते हैं कि भिन्न भिन्न नाम की मालायें निकालकर उनके दो चार अंक प्रकाशित कर उन्हें बंद कर देना सर्वथा अनुचित है; ‘सत्य-ग्रन्थ-माला’ का नाम प्रसिद्ध हो चुका है और यह माला ग्रन्थकर्त्ता के नाम पर चली है इसलिये उसी की वृद्धि-उसी का पुनरुद्धार करना न्याय-संगत है।

अपने प्रेमियों की इस उचित राय को मैंने स्वीकार कर लिया है और उनके इच्छानुसार सब नई पुस्तकें ‘सत्य-ग्रन्थ-माला’ की सीरीज़ में ही निकालूंगा। ‘सत्य-ग्रन्थ-माला’ के पुराने अंकों का Revised & Enlarged Edition संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण निकालकर उनका कापी-राइट एक फ़र्म के हाथ में देकर उनके प्रचार का ठीक ठीक प्रबंध किया जायगा क्योंकि सन् १९१९ की जिस घोषणा के अनुसार मैंने अपनी सन् १९१८ तक की सभी नई पुस्तकों का कापी-राइट पब्लिक को दिया था हिन्दी-

(E.)

पुस्तक प्रकाशकों ने उस मेरी उदारता का नाजायज़ फ़ायदा उठाया है । पुस्तकों के दाम बढ़ा बढ़ा कर उनको रद्दी कागज़ पर छाप कर उनकी रेढ़ मारदी । मैं किस किस को मना करूँ । एक फ़र्म को आदमी समझा सकता है और उससे कुछ समझौता भी कर सकता है पर सबके साथ काज़िया कौन करे ?

“सत्य-ग्रन्थ-माला” के निम्नलिखित अंकों का कापी-राइट मैंने पब्लिक को दिया था—

- १ — अमरीका-पथ-प्रदर्शक
- २ — आश्चर्यजनक-वन्टी
- ३ — अमरीका दिग्दर्शन
- ४ — अमरीका के विद्यार्थी
- ५ — मनुष्य के अधिकार
- ६ — अमरीका-भ्रमण
- ७ — सत्य-निबन्धावली
- ८ — मेरी कैलाश यात्रा
- ९ — राजर्षि भीष्म
- १० — संजीवनी बूटी
- ११ — शिक्षा का अदर्श
- १२ — लेखन-कला

बारह पुस्तकें यह और चार ट्रेक्ट १-राष्ट्रीय संध्या, २-जातीय शिक्षा, ३-हिन्दी का संदेश, और ४-वेदान्त का विजय मन्त्र, कुल सोलह पुस्तक पुस्तिकाओं का कापीराइट मैंने पब्लिक को दिया था । उन पुस्तकों के पुराने संस्करणों का कापीराइट अब भी पब्लिक की जायदाद है पर जो संशोधित संस्करण इन पुस्तकों के निकलेंगे जिन पर

REVISED & ENLARGED EDITION

छपा होगा उनका कापी राइट पब्लिक के लिए नहीं होगा । उन्हें कोई भी मुझसे आज्ञा लिए बिना या 'दी लवानियां पब्लिशिंग हाउस, आगरा' की आज्ञा बिना न छाप सकेगा । 'सत्य-ग्रंथ-माला' के बारह अंक निकल चुके हैं, तेरहवां अंक 'हमारी सदियों की गुलामी के कारण' को समझना चाहिये उसका अब जो नया संस्करण निकलेगा उसको बड़ा कर, सामग्री नई मिला कर उस पर—

सत्य-ग्रंथ-माला, संख्या १३

ऐसा छपेगा और 'श्रीबुद्ध-गीता' अर्थात् 'धम्मपद' को 'सत्य-ग्रंथ-माला' का चौदहवाँ अंक समझना चाहिये । चार ट्रेक्टों को छोड़कर बाक़ी सब पुस्तकें सत्य-ग्रंथ-माला सीरीज़ में ही छपेंगी और मेरी ओर से केवल एक ही माला निकलेगी । इसी के द्वारा मेरे ग्रंथ प्रकाशित होंगे ।

(G.)

मैं पहिली मई १९२३ को बंबई से यूरोप आंखों के इलाज के लिए जा रहा हूँ । वहां भी मैं बराबर सामग्री इकट्ठा करता रहूंगा । मुझे पत्र

C/o THE MANAGER,
THE LAVANIA PUBLISHING HOUSE,
AGRA, U. P., (India)

के पते पर भेजने चाहिये । वहां से सब पत्र मेरे पास यूरोप भेज दिये जायेंगे ।

सत्यदेव परिव्राजक.

पुस्तक-परिचय

सारे बौध-साहित्य में “धम्मपद” का दर्जा बहुत ऊँचा है। जैसे हिन्दी-साहित्य में ‘श्री भगवद्गीता’ मुसलमान-साहित्य में ‘कुरान शरीफ’ और ईसाई-साहित्य में ‘बाइबिल,’ इसी प्रकार बौद्ध-साहित्य में “धम्मपद” का स्थान समझना चाहिये। श्री गीता, कुरान और बाइबिल के मानने वाले उन पुस्तकों को इल्हामी मानते हैं, और उनमें लिखे हुए किसी भी वाक्य को न मानना गुनाह समझते हैं। ऐसी दशा “धम्मपद” के मानने वालों की नहीं है। इसका कारण स्पष्ट है। “धम्मपद” में किसी प्रकार का इतिहास नहीं अथवा इसके उपदेशों को समझने के लिये किसी बड़े मौलवी, पंडित अथवा पादरी की आवश्यकता नहीं। इसका एक एक श्लोक स्वतंत्र अर्थ रखता है और साधारण से साधारण मनुष्य भी उसके अर्थों में भूल नहीं कर सकता।

संसार के बड़े बड़े आचार्यों की अपेक्षा भगवान् बुद्ध में खास विशेषता है। भगवान् बुद्ध के उपदेश पूर्णतया व्यवहारिक और सरल हैं; उनके अर्थों में खींच-तान हो नहीं सकती; वे अत्यंत स्पष्ट और गम्भीर हैं। उनके पढ़नेवाला उनके समझने में भूल नहीं कर सकता, और साथ ही उनके गम्भीर अर्थों का

पूरा आनन्द भी ले सकता है। “धम्मपद” के उपदेश मानव-समाज रूपी समुद्र में से निकाले हुये मोती हैं जिनकी आव सदा एक रस रहती है। आज “धम्मपद” के उपदेशों के पढ़ने से वही मजा मिलता है जो तथागत महाराज के समय में उनके भिक्षुओं को मिलता होगा।

मैंने जब इस पुस्तक को पढ़ा तो उसके उपदेशों ने मेरे पर विचित्र प्रभाव डाला। दूसरी मजहबी किताबों के पढ़ने में मैंने प्रायः कई दिक्कतें अनुभव की हैं। कहीं तो उन पुस्तकों में बुद्धि विरुद्ध बातें आजाने से मन घबरा उठता है, कहीं अनर्गल बातें आने से उन पर फिलासफी गढ़नी पड़ती है, कहीं नीति विरुद्ध बातें आने से उन पर परदा डालना पड़ता है, और कहीं उस पुस्तक के आचर्य्य की प्रशंसा के पुल बांधने वाले ग्रंथकर्त्ता की खुशामदी बुद्धि पर दया आती है। “धम्मपद” इन सब दोशों से रहित है। इस में जहां बुद्ध शब्द का प्रयोग किया गया है, वह किसी खास व्यक्ति विशेष के लिये नहीं है, बल्कि बुद्धपद को प्राप्त होने वाले भावी बुद्ध अथवा निर्वाण प्राप्त भूतकालिक बुद्धों का गुण विशेषक है। इक्कीसवें वर्ग में दो श्लोक इस प्रकार के आते हैं जिन पर विद्वानों ने भिन्न भिन्न टीकाएं की हैं। मैक्सम्यूलर और चिल्डर्स ने अपने ‘धम्मपद’ के अनुवाद में इन श्लोकों का अर्थ और ढंग से किया है,

और दूसरे बौद्ध विद्वान इन श्लोकों का आलंकारिक अर्थ करते हैं। श्लोकों के शब्द स्पष्ट हैं। उनके अर्थ करने में कोई कठिनाई नहीं है। केवल शंका यह उत्पन्न होती है कि माता-पिता को मारने वाला, राजा को प्रजा सहित बध करने वाला, तथा किसी प्रसिद्ध पुरुष की हिंसा करनेवाला पापी सच्चा ब्राह्मण कैसे हो सकता है ? इसी शंका के उत्तर में बौद्ध टीकाकार ने इन श्लोकों का दार्शनिक अर्थ किया है। मैं अपनी बुद्धि अनुसार इन श्लोकों का अर्थ स्पष्ट रूप में ये समझता हूँ कि भगवान् बुद्ध ने उस काल में प्रचलित ब्राह्मणों के अन्याय-पूर्ण प्रभाव का खाका इन श्लोकों में खींचा है। उस काल में घृणित से घृणित पाप करने वाला ब्राह्मण अवध्य समझा जाता था। पौराणिक कथाओं में ऐसे ब्राह्मणों की कीर्ति गाई गई है जिन्होंने अपने माता पिता अथवा राजा को बध किया था। परशुराम ने तो कई बार पृथ्वी को क्षत्रियों से निर्बीज कर डाला था तिसपर भी वे तपस्वी ब्राह्मण बने रहे। इसलिए मेरी तुच्छ बुद्धि में इन श्लोकों का दार्शनिक अर्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं। भगवान् ने इसी समय उपदेश करते हुए दोनों आदर्शों का मुकाबला किया होगा—प्रथम बौद्ध धर्म के अनुसार ब्राह्मण का आदर्श और दूसरे कर्मकांडी ब्राह्मण का आदर्श। छब्बीसवें करण में बौद्ध दृष्टिबिंदु के अनुसार सच्चे ब्राह्मण के लक्षण

(K.)

कहे हैं और इन दो श्लोकों में; बिल्कुल उनके विपरीत ब्राह्मण का लक्षण किया है। इससे स्पष्ट है कि यह श्लोक केवल तुलनात्मक हैं, जो थोड़ेमें उस काल के समाज की भयंकर स्थिति बतलाते हैं।

‘धम्मपद’ का नाम मैंने ‘श्रीबुद्ध गीता’ कर दिया है ताकि जनसाधारण इसे शीघ्र अपना लें। एक बात के लिए मैं अपने बौद्ध मित्रों तथा अन्य पाली के विद्वानों से क्षमा प्रार्थी हूँ। मैंने इस अनुवाद में प्रत्येक प्रकरण के पहले पांच, चार, दस लाइन में छोटी सी भूमिका अपनी ओर से जोड़ दी है। ऐसा करने से मेरा अभिप्राय केवल पुस्तक की रोचकता बढ़ाने का है। मूल श्लोकों के अर्थों में कहीं बढ़ाने घटाने की चेष्टा अपनी ओर से नहीं की गई; भाषा के ख्याल से केवल कहीं कहीं अर्थ को स्पष्ट करने के लिए भावानुवाद भले ही कर दिया गया हो। यदि मेरा यह नूतन ढंग विद्वानों को अच्छा न लगा या मेरे बौद्ध प्रेमियों ने इस में कुछ आपत्ति की तो दूसरे संस्करण में मैं इसका अनुवाद मात्र ही प्रकाशित करवाऊंगा। परंतु मुझे पूर्ण विश्वास है कि इतना स्पष्ट लिख देने के बाद मेरे सब प्रेमी “धम्मपद” के इस नये अनुवाद को बहुत पसंद करेंगे और उसके नूतन ढंग के कारण इसकी लोकप्रियता बहुत बढ़ जायगी। यह पुस्तक पाठशालाओं में टेक्स्ट बुक का काम देगी।

इस पुस्तक के अनुवाद करने में मैंने हिन्दी, उर्दू, गुजराती और बंगाली अनुवादों से सहायता ली है। मूल पाली

को बंगला अक्षरों में रखकर बंगला भाषा में जो अनुवाद भाई चारुचंद्र बोस जी ने किया है उस से भी मुझे बहुत सहायता मिली है। उसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ। कई एक अनुवाद देखने का अभिप्राय केवल उचित शब्दों की खोज करना था। मैंने यत्न किया है कि यह पुस्तक शुद्ध और सरल हिन्दी-भाषा में अलंकृत होकर पाठकों के पास पहुँचे। मुझे इसमें सफलता हुई या नहीं इसका फैसला पाठक स्वयं करेंगे। मैं इस पुस्तक के प्रूफ नहीं देख सका, और न हस्तलिपि को ही पढ़ सका हूँ। आंखों के खराब होने के कारण मैं अपने इस कर्तव्य का पालन नहीं कर सका। इसलिये इसके सम्बन्ध में जो त्रुटियाँ पाठक पुस्तक में पावें उनका दोषी मुझे न समझें। मैंने पुस्तक प्रकाशन तथा प्रूफ संशोधनादि का सारा भार “दी लवानियाँ पब्लिशिंग हाउस, आगरा” के मालिक के जिम्मे कर दिया है। मैं आखें बनवाने के लिये यूरोप जा रहा हूँ। यदि ईश्वर ने मेरे ऊपर दया की और मेरी आंखें अच्छी हो गईं तो दूसरे संस्करण में ऐसी कोई त्रुटि सम्भवतया देखने में न आवेगी।

शान्ता कृष्ण,
बम्बई
१७ अप्रैल १९२३

विनीत—

सत्यदेव परिव्राजक

विषय सूची

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
१.	यमक वर्ग	१
२.	शुद्ध लगन वर्ग	७
३.	विचारसंयम वर्ग	१०
४.	पुष्प वर्ग	१३
५.	मूर्ख वर्ग	१६
६.	पाण्डित वर्ग	२०
७.	अर्हत वर्ग	२३
८.	सहस्र वर्ग	२६
९.	पाप वर्ग	२९
१०.	दण्ड वर्ग	३२
११.	जरा वर्ग	३६
१२.	आत्म वर्ग	३८
१३.	लोक वर्ग	४२
१४.	बुद्ध वर्ग	४५

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
१५.	सुख वर्ग	४९
१६.	आसक्त वर्ग	५२
१७.	क्रोध वर्ग	५५
१८.	अशुद्धता वर्ग	५८
१९.	न्याय वर्ग	६३
२०.	धर्ममार्ग वर्ग	६७
२१.	विविध वर्ग	७२
२२.	अधोगतिमार्ग वर्ग	७७
२३.	हाथी वर्ग	८०
२४.	तृष्णा वर्ग	८३
२५.	भिक्षु वर्ग	८६
२६.	ब्राह्मण वर्ग	८३



श्रीबुद्ध-गीता

अर्थात्

भगवान् बुद्ध के अमृतमय उपदेशों का संग्रहस्वरूप

“धम्मपद”

पहला प्रकरण

यमक वर्ग

भगवान् बुद्ध एक दिन प्रातःकाल, ध्यानादि से निवृत्त होकर आम्रकुंज के नीचे सिद्धासन लगाकर बैठे हुए थे । भगवान् बुद्ध के प्रिय शिष्य आनन्द, कुछ भिक्षुओं को साथ लेकर वहां आगये और हाथ जोड़ गुरुदेव की आज्ञा लेकर बोले—
“ भगवन् ! मनुष्य की मानसिक अवस्था तथा उसके कर्म सम्बन्धी पवित्र सिद्धान्त के विषय में इन भिक्षुओं को कई शंकायें हैं । यदि आपकी आज्ञा हो तो यह लोग आप से अपनी शंकाओं का समाधान कर लें । भगवान् बुद्धदेव का आदेश पाकर एक सुन्दर गौस्वर्ण नवयुवक भिक्षु ने प्रश्न किया—

“पूज्यवर गुरुदेव ! मन क्या है ? और दुःख सुख के होने का क्या कारण है ? कर्म के सिद्धान्त की व्याख्या तथा भिक्षु-धर्म को यदि आप हमें बतलावेंगे तो हमारा बड़ा उपकार होगा ।”

भगवान बुद्ध बोले—

“हमारी वर्तमान स्थिति, हमारा मन और हमारी मानसिक अवस्था हमारे विचारों का परिणाम है; इन सब का आधार हमारे विचार और संस्कार हैं । जैसा हम सोचते हैं वैसा ही बोलते और करते हैं । हमारी मानसिक अवस्था हमारे विचारों की बनी हुई है । जो मनुष्य बुरे विचार सोचता है, बुरे काम करता है, दुःख उसका पीछा इस तरह करता है जैसे गाड़ी खींचनेवाले बैल के पीछे गाड़ी का पहिया चलता है । १

हम क्या हैं ? हम केवल अपने विचारों का परिणाम स्वरूप हैं । जैसे मकान अपनी नींव के अनुसार कमजोर अथवा दृढ़ होता है जैसे मकानकी दीवारें उसकी सामग्री, ईंट, चूना, लकड़ी के अनुसार कमजोर अथवा मजबूत होती हैं, इसी प्रकार हमारी स्थिति हमारे विचारों पर निर्भर है वह उसी के अनुसार उत्पन्न हुई है । यदि मनुष्य पवित्र विचारों के अनुसार बोलता या कर्म करता है तो सुख और शांति छाया की तरह उसके साथ रहते हैं और कभी भी उसका साथ नहीं छोड़ते । ... २

‘उसने मुझे गाली दी, उसने मुझे मारा, उसने मुझको पराजित किया, उसने मुझे लूट लिया’ हे भिक्षुओ ! जो लोग इस प्रकार के विचारों को अपने अन्दर जगह देते हैं घृणा कभी उनका पीछा नहीं छोड़ती । ... ३

इसके विपरीत जो लोग, ‘उसने मुझे गाली दी, उसने मुझे मारा, उसने मुझे पराजित किया, उसने मुझे लूट लिया,’ इस प्रकार के विचारों को अपने अंदर जगह नहीं देते वैर भाव उनके दिलोंसे दूर हो जाता है । ... ४

क्योंकि यह अनादि सिद्धांत है कि द्वेष, द्वेष से शान्त नहीं होता; द्वेष अद्वेष अर्थात् द्वेषके अभाव से शांत होता है । ५

सांसारिक मनुष्य नहीं जानते कि हम सब का अंत यहीं होने वाला है; परन्तु जो इस मर्म को जानते हैं उनके भगड़े फौरन खतम हो जाते हैं । ... ६

जो विषय सुख की धुन में ही लगा रहता है, जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में नहीं हैं, जो खाने-पीने में अपनी ज़बान को काबू में नहीं रखता और जो आलसी एवम् शरीर से दुर्बल है उसको मार अर्थात् शैतान निश्चय ही पछाड़ देगा जैसे कि प्रचण्ड वायु कमजोर वृक्ष को पछाड़ देती है । ... ७

जो विषय-वासना से अलग होकर संसार में विचरता है, जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में हैं, जो खाने पीने में संयमी है,

जो श्रद्धावान और बलवान है, मार अर्थात् शैतान उसको कदापि पछाड़ नहीं सकता जैसे प्रचण्ड वायु पर्वत को कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकती । ८

जो अपने आपको विषय से मुक्त किये बिना ही पवित्र काषाय वस्त्र धारण करने का अभिलाषी है, जो संयम और सत्य की अवहेलना करता है वह काषाय वस्त्र धारण करने के नितान्त अयोग्य है । ९

परन्तु जिसने अपने आपको विषयों से मुक्त कर लिया है, जो सब प्रकार के सद्गुणों से विभूषित है और जो संयम और सत्य का आदर करता है निश्चय ही वह काषाय वस्त्र धारण करने के योग्य है । ... १०

जो सच में झूठ, और झूठ में सच देखते हैं कभी भी सच्चाई को प्राप्त नहीं कर सकते; वे केवल अपनी निकम्मी कामनाओं के गुलाम बने रहते हैं । ११

जो सत्य में सत्य और झूठ में झूठ पहचानते हैं वे सच्चाई को हासिल करते हैं और शुद्ध कामनाओं के अनुसार जीवन बनाते हैं । १२

जैसे बेढंगे ढंग से छाये हुए मकान की छत पर से वर्षा का पानी चूने लगता है उसी प्रकार विवेकशून्य मन में से विषय कामनायें फूट निकलती हैं । ... १३

जैसे अच्छे प्रकार छाये हुये मकान की छत में से वर्षा का पानी नहीं चू सकता इसी प्रकार विवेकसम्पन्न मन पर विषय-वासनाओं का कुछ भी असर नहीं पड़ सकता ।... १४

हे भिक्षुओ ! बुराई करने वाला इस लोक में पश्चात्ताप करता है और परलोक में भी पश्चात्ताप करता है; वह दोनों लोकों में पश्चात्ताप करता है । वह अपने गंदे कामों को देखकर पश्चात्ताप करता है और अत्यन्त कष्ट पाता है । ... १५

सदाचारी पुरुष इस लोक में प्रसन्न रहता है और परलोक में भी सुखी रहता है । वह दोनों लोकों का आनन्द लेता है । जब वह अपने कर्मों की शुद्धता को देखता है तो बड़ा प्रसन्न और सुखी होता है । १६

कुकर्मी इस लोकमें दुःखी रहता है और परलोक में भी; वह दोनों लोकों में दुःख भोगता है । जब वह अपने बुरे कर्मों के बुरे फल देखता है तो उसे बड़ा रंज होता है और बुराई के रास्ते पर चलते हुए उसे सब से अधिक कष्ट पहुँचता है ।... १७

सत्कर्मी इस लोक में सुखी है और दूसरे लोक में भी वह सुखी रहता है, वह दोनों लोकों में सुखी रहता है । जिस समय वह अपने अच्छे कर्मों का शुभ परिणाम देखता है तो उसे बड़ी शांति मिलती है । जब वह अपने आप को धर्म-पथ पर चलते हुए देखता है तो उसे और भी अधिक आनन्द प्राप्त होता है ।

जिस अविवेकी भिक्षु ने धर्म-पथ के बहुत से श्लोकों को तो कंठ कर लिया है मगर उनके अनुसार कर्म नहीं करता वह भिक्षुपद का किसी अंश में भी भागीदार नहीं है; उसका जीवन एक ग्वाले की तरह है जिसका काम केवल दूसरों की गायों की गिनती करना है । १६

सत्यधर्म का अनुयायी यदि धर्म के बहुत से श्लोकोंको तो कंठ नहीं करता लेकिन वह काम, क्रोध और जड़ता को दूर कर सत्य-ज्ञान और मनकी शांति प्राप्त कर लेता है, जो इस लोक तथा परलोक की परवाह नहीं करता निश्चय ही वह भिक्षुपद का सच्चा भागीदार है ।” ... २०

दूसरा प्रकरण

शुद्ध लगन वर्ग

भिक्षुओं के एक मठ में भगवान् बुद्ध घूमते हुए जा निकले। कुछ प्रमादी, आलसी भिक्षुओं को देख कर भगवान ने उन्हें अप्रमाद के सम्बन्ध में निम्नलिखित सुन्दर उपदेश दिया:—

“हे भिक्षुओ, सच्ची लगन अमरत्व के पथ पर ले जाती है और प्रमाद को मृत्यु का मार्ग समझना चाहिये। वे जिन्हें सच्ची धुन लगी है कभी नहीं मरते हैं और जो प्रमादी हैं वह मरे हुए के समान ही हैं। १

जो अप्रमाद के मार्ग में अग्रसर हैं और जिन्होंने उसके तत्त्व की महिमा को समझ लिया है वे सच्ची लगन में मस्त रहते हैं और प्राचीन आर्य लोगों के ज्ञानामृत का सुख लाभ करते हैं। २

ऐसे ही चिन्ताशील, स्थिरचित्त, और सदा बलवान शक्तियों से विभूषित धीमान् पुरुष सब से श्रेष्ठ निर्वाण पद को प्राप्त करते हैं। ३

जो अप्रमादी जागृत हो जरा भी भूल न करे, जिसके कार्य्य शुद्ध हैं, जो विचारपूर्वक वरतता है, जो आत्म-

संयम करता है और धर्म के नियमानुकूल अपना आचरण रखता है उसकी कीर्ति सदा बढ़ती रहती है । ४

जागृत होने, अप्रमत्त दशा में रहने, इन्द्रियों के निग्रह करने और मन के संयम करने से मनुष्य अपने लिये एक ऐसा द्वीप बना लेता है जिसे भयंकर से भयंकर बाढ़ भी डुबा नहीं सकती । ... ५

मूर्ख भड़कीली वस्तुओं के पीछे दौड़ते हैं परन्तु बुद्धिमान अप्रमाद को अपना सब से बढ़िया आभूषण समझते हैं । ... ६

भड़कीली वस्तुओं के पीछे मत भागिए और न विषय भोग के पीछे ही अंधे बनिए । जो अप्रमादी और चिन्ताशील है उसे अपूर्व आनन्द मिलता है । ... ७

जब ज्ञानी पुरुष सच्ची लगन द्वारा विवेक से अपने मिथ्याभिमान को दूर भगा देता है, तब वह शोक रहित हो ज्ञान रूपी ऊँचे शिखर पर चढ़कर नीचे खड़े हुए मूर्ख लोगों को देखता है । वहाँ वह स्थिरचित्त होकर विषय-भोग की कीच में हाथ पैर पटकते हुए जन-समूह को इस प्रकार देखता है जैसे पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ मनुष्य मैदान में खड़े हुये मनुष्यों को देखता है । ... ८

प्रमादियों में जो अप्रमादी है और सोते हुए लोगों में जो जागृत है वह मनुष्य दौड़ में भागने वाले उस तेज घोड़े की तरह हैं जो दुबले टट्टू को पीछे छोड़ देता है । ... ६

सच्ची धुन के कारण ही इन्द्र को देवताओं में सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त हुआ । लोग उत्साह और सच्ची धुन की तारीफ़ करते हैं और प्रमाद की सदा निन्दा करते हैं । ... १०

जो भिक्षु सच्ची धुन में मस्त रहता है, जो असावधानी को पास नहीं आने देता, वह आग की तरह अपने सब छोटे बड़े बंधनों को जलाता हुआ चलता है । ११

जो भिक्षु अप्रमाद अर्थात् विचारशीलता में सुख मानता है—गफलत की ओर भय से देखता है—अपने पूर्ण पद से नीचे नहीं गिरता—वह निर्वाण के अत्यन्त निकट है ।” ... १२

तीसरा प्रकरण

विचारसंयम वर्ग

नदी किनारे शांत चित्त बैठे हुए भगवान बुद्धदेव से एक गृहस्थ ने आकर इस प्रकार प्रश्न किया:—

“हे तथागत महाराज ! चंचल चित्त को वश करने के विषय में आप मुझे कुछ उपदेश दीजिये । विचारों का संयम किस प्रकार किया जाय ? उसके लाभ और हानि भी यदि आप मुझे बतलायेंगे तो मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँगा ।”

भगवान बोले —

“जैसे धनुष बनानेवाला बाण को सीधा करता है उसी प्रकार बुद्धिमान् पुरुष अपने चंचल, चपल और अस्थिर विचारों को जिनका वश करना तथा रोकना बहुत कठिन है, स्थिर करता है ।

....

१

जैसे अपने घर, जल से बाहर निकालने पर मछली सूखी जमीन पर डालने से छूटपटाने लगती है, उसी प्रकार मार अर्थात् कामदेव के जाल से छूटने के लिये हमारा विचार तड़पता है ।

....

२

मनको वश में करना सर्वोत्तम काम है क्योंकि मन चपल होने के कारण बहुत मुश्किल से वश में होता है, वह अपनी मर्जी के मुताबिक इधर उधर दौड़ता रहता है। वश में किया हुआ मन सुख लाता है। ३

बुद्धिमान पुरुष को चाहिये कि वह अपने सूक्ष्मगति से चलनेवाले कुटिल और स्वेच्छाचारी चित्त की रक्षा करे क्योंकि सुरक्षित चित्त सुख प्रदान करता है। ४

मन बहुत दूर भटकता रहता है, यह अकेला फिरता है, यह शरीर रहित है और हृदय के अंदर छिप जाता है। ऐसे मन को जो वश में करता है वह शैतान राजा के जाल से मुक्त हो जाता है। ५

यदि मनुष्य के विचार अस्थिर हैं, यदि वह सत्यधर्म को नहीं समझता, यदि उसके मन की शान्ति भङ्ग हो गई है तो उसका ज्ञान कभी भी पूरा नहीं हो सकता। ६

यदि मनुष्य के विचार अस्थिर नहीं हैं, यदि उसका मन घबरा नहीं गया, यदि वह भले बुरे विचारों से परे है, और यदि वह सावधान है, तो उसको किसी प्रकार का भय नहीं है। ७

यह शरीर घड़े की तरह क्षणभंगुर है, ऐसा जानकर मनुष्य को मजबूत विचारों का किला बांध, ज्ञान का शस्त्र हाथ में

ले शैतान पर हमला करना चाहिये, उसे जीतने क पश्चात् उसकी
स्वबरदारी करनी लाजिमी है और कभी लापरवाही से बैठना
उचित नहीं । ८

अफ़सोस ! बहुत समय न बीतेगा कि यह शरीर पृथ्वी पर
लकड़ी के सूखे लट्टे की तरह निकम्मा, विचारशून्य और
तिरस्कृत होकर पड़ा होगा । ९

द्वेषी अपने प्रतिद्वेषी का अथवा शत्रु अपने विपक्षी का
जितना नुकसान करता है उससे बढ़कर कुपथगामीमन मनुष्य
का अहित करता है । ... १०

सुमार्ग में लगा हुआ मन मनुष्य का जिस प्रकार भला
करता है, उस प्रकार माता-पिता तथा दूसरे बन्धुवर्ग भी नहीं
कर सकते ।” ... ११

चौथा प्रकरण

पुष्प वर्ग

वसन्त का सुहावना ऋतु था । राजा बिम्बसार के बाग में भिक्षु लोग अपने गुरुदेव के साथ एकत्र हुए थे । फूलों की सौंधी महक आरही थी । मधुमक्खियाँ एक फूल से दूसरे फूल पर, दूसरे से तीसरे पर गुनगुनाती हुई मधु इकट्ठा कर रही थीं । पूर्व दिशा से सूर्यदेव अपना निर्मल प्रकाश फैला रहे थे । ऐसे अवसर पर भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को इस प्रकार उपदेश दिया:—

कौन इस पृथ्वी, यमलोक तथा देवलोक पर विजय प्राप्त करेगा ? जैसे चतुर मनुष्य उपयुक्त पुष्प को तलाश कर लेता है उसी प्रकार नेकी का सीधा मार्ग कौन ढूँढ़ निकालेगा ? १

मुमुक्षु पुरुष, पृथ्वी, यमलोक और देवलोक पर विजय प्राप्त करेगा । वह नेकी का सीधा रास्ता इस प्रकार तलाश कर लेगा जैसे चतुर मनुष्य अपने मन के योग्य उपयुक्त पुष्प को तलाश कर लेता है । २

जो शरीर को पानी के बुलबुले की तरह क्षणभंगुर समझता है और जिसे यह भली प्रकार ज्ञात है कि शरीर मृग-तृष्णावत् है वही कामदेव के पुष्प-बाण को तोड़ डालेगा और यमराज से कभी भी उसकी भेंट न होगी । ... ३

जैसे बाढ़, सोते हुए ग्राम को बहा ले जाती है, उसी प्रकार मृत्यु उस मनुष्य को ग्रस लेती है जो फूलों को इकट्ठा कर रहा है और जिसका मन अस्थिर है । ... ४

फूलों की चिन्ता करनेवाले और विषयों में लगे हुए उन्मत्त चित्त वाले पुरुष को उसकी कामनाएं पूरी होने के पहले ही मौत उसे अपने पंजे में कर लेती है । ... ५

जैसे मधुमक्खी फूल के रंग तथा उसकी सुगंधि को किसी प्रकार की क्षति पहुंचाए बिना मधु इकट्ठा करती है इसी प्रकार भिक्षु को ग्राम में निवास करना चाहिये । ६

भिक्षु को दूसरे की कमज़ोरियों, दूसरे के किये हुये पापों या छोड़े हुए कर्तव्यों की ओर ध्यान न देना चाहिये बल्कि उसे अपने बुरे कर्मों और असावधानियों का विशेष ध्यान रखना उचित है । ७

उस मनुष्य के वचन सुन्दर लेकिन निरर्थक हैं जो अपने कहने के अनुसार अमल नहीं करता । जैसे सुगन्ध रहित पुष्प सुन्दर वर्ण युक्त और मनोहर होने पर भी व्यर्थ है । ८

उस पुरुष के शब्द सुन्दर और सुगन्धयुक्त पुष्प की तरह सार्थक हैं जो अपने कहने के अनुसार अमल करता है । ... ९

जैसे फूलों के ढेर में से कई प्रकार की मालायें बनाई जा सकती हैं उसी प्रकार एक बार मानवजीवन धारण करके

पुरुष बहुत से सद्गुण प्राप्त कर सकता है । ... १०

फूलों की सुगन्ध, पवन की गति के विरुद्ध नहीं जाती; न चन्दन, तगर और मल्लिकाफूल की सुगन्ध ही; लेकिन सज्जनों की ख्याति रूपी सुगन्ध प्रचण्ड पवन के विरुद्ध भी फैलती है; एक सज्जन का जीवन सर्वव्यापक बन जाता है । ... ११

चंदन या तगर, कमल या चमेली इत्यादि सुगंधियों के मुक्ता-बले में सज्जनता की सुगंध सब से बढ़ कर है । ... १२

चंदन और तगर से जो महक आती है वह तुच्छ है; उनकी सुगन्धि जो सज्जनता की खान है उच्चतम दर्जे के देव-ताओं तक पहुँचती है । ... १३

उन लोगों को जो सच्चरित्रता के गुणों से सम्पन्न हैं, जो विचारशील हैं और जो सत्यज्ञान द्वारा बंधनों से मुक्त हो गये हैं उनके नजदीक शैतान फटक नहीं सकता । ... १४

जिस प्रकार रास्ते में फेंके हुये कूड़े कचरे के ढेर पर उगी हुई नलिनी भी सुगंधित और मनोहर होती है उसी प्रकार ज्ञानांध और चरित्रहीन पुरुषों के बीच से निकला हुआ बौध भिक्षु अपने सच्चे ज्ञान के प्रभाव से शोभायमान होता है ।” ... १५



पाँचवाँ—प्रकरण

मूर्खवर्ग

आनंद ने एक दिन भगवान बुद्धदेव से हाथ जोड़ कर निवेदन किया, “पूज्य गुरुदेव, मूर्ख कौन है ? कृपा कर आप मुझे अच्छी प्रकार समझाइये क्योंकि प्रायः लोग एक दूसरे को, जब कोई उनकी बात न माने, मूर्ख कहने लगते हैं । इस शब्द का ठीक प्रयोग किन अर्थों में किया जाता है ? ”

भगवान बुद्धदेव बोले—“हे आनन्द, जो जागता है उसे रात बड़ी लम्बी मालूम होती है; जो थका हुआ है उसके लिये एक मील चलना भी दूबर है; धर्म को न जानने वाले मूर्ख के लिये जीवन के दिन मुश्किल से कटते हैं ।” १

किसी मुसाफिर को रास्ते में अपना सा या अपने से बढ़कर विद्वान साथी न मिले तो उसे दृढ़ता से अकेले ही सफ़र करना चाहिये क्योंकि मूर्खों के साथ सहवास अनुचित है । २

‘यह मेरे लड़के हैं, यह मेरा धन है’ मूर्ख इन्हीं विचारों से पीड़ित रहता है । उसका अपना शरीर भी हकीकत में अपना नहीं है । फिर भला संतान और धन कितने दर्जे तक उसके बन सकते हैं । ३

मूर्ख पुरुष जो अपनी मूर्खता को समझता है उस दर्जे तक बुद्धिमान है। लेकिन जो मूर्ख अपने आपको बुद्धिमान समझता है वह निश्चय ही मूर्ख है। ४

जिस प्रकार चमचा निरंतर दाल-तरकारी के साथ रहने पर भी उनका रसास्वादन नहीं कर सकता है, उसी प्रकार मूर्ख जीवन पर्यन्त ज्ञानी के साथ रहने पर भी धर्म को नहीं जान सकता है। ... ५

जैसे जबान दाल-तरकारी के स्पर्शमात्र से ही उनका स्वाद जान लेती है इसी प्रकार समझदार मनुष्य एक मिनट के लिये भी यदि विद्वान् की संगति करे तो वह अति शीघ्र सत्य का अनुभव कर लेगा। ६

अल्पबुद्धि के मूर्ख लोग खुद अपने बड़े कष्ट शत्रु हैं, क्योंकि वे कड़वे फल उत्पन्न करनेवाले कर्मों को करते हैं। ७

वह धर्म सचमुच श्रेष्ठ नहीं कहलाता जिसके करने के पश्चात् हाथ मलने पड़ें और जिसके फल के मिलते समय आँसू बहाने पड़ें। ८

इसके विपरीत वह काम श्रेष्ठ है जिसके करने के बाद मनुष्य को कोई पश्चात्ताप नहीं करना पड़ता और जिसका फल वह खुशी से हँसते हुये लेता है। ९

जब तक बुरा कर्म बुरे परिणाम पैदा नहीं करता तब तक मूर्ख को वह मधु की तरह मीठा मालूम होता है; लेकिन जब बुरा काम बुरे फल देने पर आता है तब मूर्ख पुरुष सिर धुन धुन कर पछताता है । ... १०

किसी त्यागी की तरह यदि कोई मूर्ख महीनों कुशा के तिनके से भोजन करे, तो भी वह धर्म-पथ पर चलने वाले पुरुष की सोलहवाँ हिस्सा भी बराबरी नहीं कर सकता । ... ११

ताजा दुहा हुआ दूध जैसे जल्दी नहीं बिगड़ता उसी प्रकार बुरे कर्मों का फल भी जल्दी मालूम नहीं होता, किन्तु वह राख से दबी हुई अग्नि की तरह है और वह उस मूर्ख का पीछा नहीं छोड़ता । ... १२

और बुरे कर्मों का भेद खुलने के बाद मूर्ख को केवल रंज ही नहीं पहुँचता बल्कि उसकी खुशनसीबी को भी मिट्टी में मिला देता है; यहां तक कि दुःख के मारे उसका सिर फटने लगता है । ... १३

मूर्ख मनुष्य खोटी कीर्ति की चाह रखता है; उसे भिक्षुओं में नेता बनने की धुन होती है, वह मठों की महन्तगिरी के पीछे बगा फिरता है और दूसरे लोगों से पुजवाने की अभिलाषा में संलग्न रहता है । ... १४

‘गृहस्थ और गृहत्यागी समझें कि यह काम मैंने किया है; जो काम करना है या नहीं करना है उसके लिये वे मेरे फैसले के अनुसार चलें’ इस प्रकार विचार करने से मूर्ख पुरुष के अहंकार और तृष्णा की वृद्धि होती है । १५

एक मार्ग धन की तरफ़ ले जाने वाला है और दूसरा पथ निर्वाण की ओर ले जाने वाला है, यदि बुद्ध के भिक्षु ने इस बात को भली प्रकार समझ लिया है तो वह प्रतिष्ठा की लालसा नहीं करेगा बल्कि वह संसार से मुक्त होने का प्रयत्न करेगा” । १६

छटा प्रकरण

परिडत वर्ग

एक दिन सभा लगी हुई थी, भगवान बुद्ध आसन पर विराजमान थे । उस समय एक ब्राह्मण ने नम्रतापूर्वक इस प्रकार निवेदन किया—

“हे पापों के नाश करनेवाले यतिवर, आप हम सबको परिडत तथा ज्ञानी पुरुष के सम्बन्ध में कुछ वचनामृत पान कराइये । परिडत और ज्ञानी को हम कैसे पहिचानें और ज्ञान का मार्ग किस प्रकार जाना जाता है ?”

भगवान बुद्ध देव बोले:—

“यदि आप की एक ऐसे समझदार आदमी से भेंट हो जो आपको सच्चे खजाने (सत्यधर्म) का पता बतलाता है; जो छोड़ने योग्य बातों को बतलाता है और जो धिक्कार भी देता है, ऐसे ज्ञानी का अनुसरण करना उचित है; उसके पीछे चलने वालों को लाभ ही होगा हानि नहीं । ... १

उसकी धिक्कार सुनिये, उसके उपदेश सुनिये, अनुचित बातों को रोकने दीजिये । भले पुरुष इस के लिये उसे प्यार करेंगे और बुरे लोग उस से घृणा करेंगे । ... २

दुराचारियों के साथ मित्रता मत कीजिये, नीच पुरुषों को अपना मित्र मत बनाइये, नेक आदमियों के साथ दोस्ती कीजिये और सबसे श्रेष्ठ आदमियों को अपना मित्र बनाइये । ... ३

जो ज्ञान-सागर में डुबकी लगाता है वह स्थिरचित्त होकर सुख पूर्वक रहता है: आर्यों के बताये हुये धर्म उपदेशों पर चलने से मुनि को सदा परमानन्द मिलता है । ... ४

जैसे नहर खोदने वाले अपनी इच्छानुसार पानी को ले जाते हैं; बाण बनानेवाले अपनी इच्छानुसार बाण को टेढ़ा कर डेते हैं बड़ई लकड़ी के कुंदे को टेढ़ा कर लेते हैं, वैसे ही बुद्धिमान अपनी इच्छानुसार अपने आप को ढाल लेते हैं । ... ५

जैसे ठोस चट्टान को प्रचण्ड पवन हिला नहीं देती वैसे ही निन्दा और स्तुति बुद्धिमान को विचलित नहीं कर सकती । ६

बुद्धिमान आदमी धर्मोपदेश सुनने के बाद गम्भीर, समतल और स्थिर सरोवर की तरह शांत हो जाते हैं । ७

वे विषय-भोग की तृप्ति की इच्छा से चाहे कुछ ही हो जायँ (सत्पुरुष) अपने काम में बड़े चले जाते हैं, बकवाद नहीं करते; चाहे सुख में हों चाहे दुःख में ज्ञानी पुरुष न तो कभी गर्व में ही आते हैं और न विषाद ही करते हैं । ... ८

जो अपने लिये स्त्री, संतान, लक्ष्मी, प्रभुता और अनुचित रीति से अपनी उन्नति की अभिलाषा नहीं रखता वही साधु, ज्ञानी और धर्मात्मा है। ६

संसार में ऐसे बहुत कम पुरुष हैं जो भवसागर पार कर अर्हत (पूर्ण ज्ञानी) पदको प्राप्त करते हैं, अधिकांश लोग इस संसार-सागर के किनारे इधर उधर भटकते रहते हैं। ... १०

लेकिन वे जिन्होंने धर्म के रहस्य को समझ लिया है, उसके अनुसार चलते हैं वे यमराज के दुस्तर राज्य को भी पार कर जाते हैं। ११

ज्ञानी पुरुष को साधारण जीवन की अन्धकारमय दशा को त्याग कर भिक्षुपद के प्रकाशयुक्त जीवन को धारण करना चाहिये। अपने गृहस्थ को त्यागकर जब पुरुष गृहत्यागी अर्थात् भिक्षु बन जाय तब उसे चाहिये कि वह एकांत में ही पूर्ण आनंद मानें। सब प्रकार के सांसारिक सुखों को पीछे छोड़ और किसी वस्तु को भी अपनी न मान कर ज्ञानी को सभी मानसिक चिन्ताओं से अपने आपको मुक्त करना चाहिये। १२

जिनके मन में ज्ञान के सातों तत्त्वों का भली भांति विकाश हो गया है, जो किसी वस्तु में आसक्त हुये बिना निवृत्ति में सुख मानते हैं, जिन्होंने विषयविकारों को जीत लिया है और जो ज्ञान से परिपूर्ण हैं वे इस संसार में ही जीवनमुक्त हैं। १३

सातवाँ प्रकरण

अर्हत वर्ग

सूर्यास्त होने को था। भगवान बुद्ध घूमते हुए एक गांव में पहुँचे जहाँ लोग उनका उपदेश सुनने के लिये इकट्ठे हुए थे। उनके पाँवों पर धूल पड़ी हुई थी। चेहरे से मालूम होता था कि आज कुछ अधिक यात्रा की है। लोगों ने बड़ी श्रद्धा से पूज्य गुरुदेव के चरण धोये और हाथ मुँह धोने के बाद भगवान ने इस प्रकार उपदेश दिया:—

“जिसने अपनी यात्रा को समाप्त कर लिया है, जिसने चिन्ताओं को त्याग दिया है, जिसने सब तरह से अपने आप को स्वाधीन कर लिया है और सब बंधनों को काट दिया है वह कष्टों से परे है। १

उनको घरमें सुख मालूम नहीं होता, वे भली प्रकार विचार कर घर को त्याग देते हैं, जैसे राजहंस अपने घरबरा-भील-को त्याग देते हैं। २

वे पुरुष जिनके पास धन नहीं है, जो खास किस्म का भोजन करते हैं, जिन्होंने पूर्ण स्वाधीनता पद निर्वाण को प्राप्त कर

लिया है उनका मार्ग आकाश में विचरनेवाले पक्षियों के मार्ग की तरह समझना कठिन है । ३

वह जिसकी विषय वासनायें शांत हो गई हैं जो भोग में रत नहीं है, जिसने असीम स्वाधीनता पद निर्वाण को प्राप्त कर लिया है उसका मार्ग हवा में विचरनेवाले पक्षियों के मार्ग की तरह समझना कठिन है । ४

देवता भी उसके साथ स्पर्धा करते हैं जिसकी इन्द्रियाँ अच्छे प्रकार सधे हुये घोड़े की तरह उसके वश में हैं, जो अभिमान से परे है और जो वासनाओं से मुक्त है । ... ५

इस प्रकार का कर्तव्यपरायण पुरुष, भूमि तथा इन्द्रबज्र की तरह सहनशील हो जाता है. वह कीच से रहित सरोवर की तरह है; वह पुनर्जन्म की प्रतीक्षा नहीं करता । ६

उसके विचार स्थिर हो जाते हैं और निश्चय ही उसके वचन और कर्म क्षोभरहित हो जाते हैं । जब वह सत्य ज्ञान द्वारा बंधन रहित हो जाता है तब वह मौनी कहलाता है । ७

वह मनुष्य जो अंधविश्वासी नहीं है, जो असृष्ट वस्तु को पहिचानता है, जिसने सब बंधनों को तोड़ दिया है जिसने सब लालसाओं को दूर कर दिया है और जिसने सब इच्छाओं को त्याग दिया है वही सब से श्रेष्ठ मनुष्य है । ८

भोंपड़ी में चाहे जंगल में, समुद्र में चाहे सूखी जमीन पर,
जहां जहां मुक्त पुरुष निवास करता है वही स्थान आनन्ददायक
हो जाता है । ६

जंगल सुखद बन जाते हैं जहां सांसारिक मनुष्यों को
कुछ भी आमोद प्रमोद नहीं मिलता वहां निर्विकारी पुरुष को
आनन्द मिलता है क्योंकि उसे बाह्य सुख की तलाश नहीं है” । १०

आठवाँ प्रकरण

सहस्र वर्ग

बौद्धों के बड़े बिहार में दूर दूर से भिक्षु लोग आकर एकत्र हुए थे । गृहस्थ लोग भी भगवान तथागत महाराज का उपदेश सुनने के लिये वहां आये थे । नियत समय पर भगवान् ने सङ्गत को इस प्रकार उपदेश दिया—

“उपदेश में चाहे हजारों शब्द क्यों न हों अर्थात् वह कितना ही लम्बा क्यों न हो, परन्तु यदि उसके शब्द निरर्थक हैं तो उसकी कुछ भी कीमत नहीं । इसके विपरीत सार्थक भावों से पूर्ण एक शब्द भी जो सुननेवाले को शान्ति प्रदान करे श्रेष्ठतर है । १

एक गाथा या कविता जिसमें चाहे एक हजार शब्द हों लेकिन हो निरर्थक शब्दों से भरी हुई तो उसकी कोई भी कीमत नहीं । सुननेवाले किसी एक मनुष्य को भी शान्ति प्रदान करनेवाली गाथा का एक शब्द ही श्रेष्ठतर है । २

यद्यपि एक मनुष्य निरर्थक शब्दों से पूर्ण सैकड़ों गाथाओं का जाप करता है, लेकिन धर्म का एक शब्द जिस से सुनने वाले के हृदय को शान्ति मिले श्रेष्ठतर है । ३

यदि कोई पुरुष हजार आदमियों को हजारों बार युद्ध में जीत लेता है और दूसरा मनुष्य अपने पर विजय प्राप्त कर लेता है तो वह सबसे बड़ा विजेता है । ... ४

दूसरे मनुष्यों को जीतने की अपेक्षा अपने ऊपर विजय प्राप्त करना श्रेष्ठतर है । देवता, गंधर्व, शैतान यदि उन्हें ब्राह्मण की भी सहायता मिले तो भी वे आत्मविजयी और संयमी पुरुष की विजय को पराजय में नहीं बदल सकते । ५

यदि कोई एक सौ वर्ष तक मास प्रति मास हजारों रुपये स्रर्च कर के यज्ञ करता है और यदि वह केवल एक क्षण के लिये भी किसी स्थितिप्रज्ञ महात्मा को अभिवादन करता है तो उसका वह अभिवादन उस सैकड़ों वर्षों के बलिदान की अपेक्षा श्रेष्ठतर है । ... ६

यदि कोई पुरुष जंगल में निवास कर एक सौ वर्ष तक अग्नि की पूजा करता है और यदि वह केवल एक क्षण के लिये भी किसी स्थितिप्रज्ञ महात्मा को अभिवादन करता है तो उसका वह अभिवादन उस सौ वर्ष की पूजा की अपेक्षा श्रेष्ठतर है । ७

जो बृद्ध पुरुषों को सदा नमस्कार करता है और उनका निरंतर आदर करता है उसके चार पदार्थों, अर्थात् आयु, सुस्मृता, सुख और बल, की वृद्धि होती है ।

लेकिन जो दुराचारी और असंयमी बनकर सौ वर्ष तक जीता है उसकी अपेक्षा सदाचार और विवेक का एक दिन का जीवन श्रेष्ठतर है। ... ६

और जो अज्ञानी और असंयमी बनकर सौ वर्ष का जीवन व्यतीत करता है उसकी अपेक्षा बुद्धिमत्ता और विवेक से सना हुआ एक दिन का जीवन भी श्रेष्ठतर है। ... १०

और जो आलसी और दुर्बल बनकर सौ वर्ष का जीवन व्यतीत करता है उसकी अपेक्षा दृढ़ वीर्य वाले पुरुष का एक दिन का ही जीना श्रेष्ठतर है। ... ११

जो पुरुष आदि और अन्त अथवा जन्म और मृत्यु का विचार किये बिना सौ वर्ष तक जीता है उसकी अपेक्षा आदि और अन्त का विचार करने वाले का एक दिन का ही जीना श्रेष्ठतर है। १२

जो पुरुष अमृत्यु पद को देखे बिना अर्थात् निर्वाण-सुख अनुभव किये बिना सौ वर्ष तक जीता है उसकी अपेक्षा निर्वाण-सुख अनुभव करने वाले का एक दिन का ही जीना श्रेष्ठतर है। ... १३

और जो पुरुष सबसे पवित्र बौद्धधर्म को जाने बिना सौ वर्ष तक जीता है उसकी अपेक्षा सबसे पवित्र बौद्धधर्म के समझने वाले पुरुष का एक दिन का जीना ही श्रेष्ठतर है।” १४

नवौं प्रकरण

पाप वर्ग

भगवान बुद्ध के चिरंजीव राहुल की अवस्था १२ वर्ष की थी। पूज्य गुरुदेव जी ने एक दिन उसे इस प्रकार उपदेश दिया—

“यदि मनुष्य को शुभ काम करने की उतावल है तो उसे अपने विचारों को बुराई से दूर रखना चाहिये। यदि मनुष्य सुस्ती से किसी शुभ काम को करता है तो उसका मन बुराई में सुख मानता है। १

यदि मनुष्य एकबार पाप को कर बैठे तो उसे दुबारा वह पाप न करना चाहिये, उसे पाप करने में मज्जा मानना उचित नहीं। दुःख बुरे कर्म का परिणाम है। २

पापी पुरुष—जब तक कि उसका पाप बुरे फल देने लायक नहीं होता—अपने उस पाप में सुख मानता है, लेकिन जब उसका पाप फल देने के काबिल हो जाता है तब पापी को बुराई का भान होता है। ३

साधु पुरुष के अच्छे कर्म जब तक शुभ परिणाम नहीं लाते तब तक उसे भी बुरे दिन देखने पड़ते हैं, लेकिन जब उसके शुभ-कर्म परिपक्व हो जाते हैं तब वह सुख के दिन देखता है। ४

किसी पुरुष को दिखिगी के तौर पर भी अपने दिल में ख्याल करके कि इसका मेरे ऊपर कुछ भी असर न होगा बुराई नहीं करनी चाहिये, क्योंकि जैसे एक एक बूँद जल गिरने से पानी का घड़ा भर जाता है उसी प्रकार थोड़ा थोड़ा संचय करने पर भी मूर्ख मनुष्य बुराई से भर जाता है । ५

अपने दिल में यह विचार कर कि इसमें मुझे कुछ लाभ न होगा किसी पुरुष को हलकेपन से भलाई की ओर न देखना चाहिये क्योंकि जैसे एक एक बूँद जल गिरने से पानी का घड़ा भर जाता है उसी प्रकार थोड़ा थोड़ा संचय करने से भी बुद्धिमान पुरुष नेकी का खजाना बन जाता है । ६

जिस प्रकार बहुत सा धन साथ में लेकर चलनेवाला व्यापारी साथियों की कमी के कारण खतरनाक रास्ते का त्याग करता है या जैसे जिंदगी से प्यार करनेवाला पुरुष विष से बचता है उसी प्रकार मनुष्य को चाहिये कि वह पाप कर्म से बचे । ७

जिसके हाथ में घाव नहीं है वह विष को हाथ से छू सकता है, जिसके घाव नहीं है विष उस पर कुछ असर नहीं कर सकता, उसी प्रकार जिसने बुराई नहीं की उस पर बुराई का कुछ असर नहीं पड़ सकता । ८

यदि मनुष्य किसी निर्दोष, सदाचारी और बेगुनाह पुरुष को सताता है तो उसका वह बुरा कर्म लौट कर उसी को सताता है जैसे प्रचण्ड पवन की तरफ धूल फेंकने से धूल फेंकने वाले के ऊपर पड़ती है । ८

कुछ आदमी आवागमन के चक्र में रहते हैं, पापी नरक को जाते हैं, धर्मात्मा स्वर्ग को जाते हैं, जो सब सांसारिक इच्छाओं से मुक्त हैं वे निर्वाण पद को प्राप्त करते हैं । ९

ऐसा स्थान न आकाश में, न समुद्र के बीच में, न पर्वतों की कन्दराओं में; और न इस भूमण्डल पर ही मालूम हुआ है जहाँ मनुष्य बुरे कर्म के फल से बच सके । १०

ऐसा स्थान न आकाश में, न समुद्र के बीच में, न पर्वतों की कन्दराओं में और न इस भूमण्डल पर ही मालूम हुआ है जहाँ मनुष्य मौत के पंजे से छूट सके ।' ११

दसवाँ प्रकरण

दण्ड धर्म

भिक्षुओं के पास एक दिन एक दण्डधारी राज-कर्मचारी दर्शन करने के लिये आया । बातचीत करते हुए भिक्षुओं ने उसे अहिंसा धर्म का उपदेश दिया । जब उस राजकर्मचारी ने दण्ड के विषय में कुछ प्रश्न किये तो सब लोग उठ कर भगवान् बुद्धदेवजी के पास अपनी शंकाओं का समाधान करने के लिए गये । उस समय भगवान् ने यह सारगर्भित उपदेश दिया—

“सब लोग सजा पाने से भय खाते हैं, सब लोग मृत्यु से डरते हैं । स्मरण रखिये कि आप भी उनकी तरह हैं, और न कभी स्वयं पशु हत्या कीजिये और न उसका कारण ही बनिए । १

सब लोग सजा पाने से भय खाते हैं, सब लोग जिन्दगी से प्यार करते हैं, स्मरण रखिये कि आप भी उनकी तरह हैं और कभी न स्वयं पशु हत्या कीजिये और न उसका कारण ही बनिए । २

जो पुरुष अपने सुख की आकांक्षा से प्राणियों को दण्ड देता है अथवा उनका बध करता है उसे मृत्यु के बाद कुछ भी सुख न मिलेगा । ३

जो पुरुष अपने सुख की आकांक्षा से प्राणियों को दंड नहीं देता है अथवा उनका बध नहीं करता है उसे मृत्यु के बाद सुख मिलेगा । ... ४

किसी को कठोर वचन मत कहो; जिनको आप कठोर वचन कहते हैं वे भी आपको उसी प्रकार जवाब देंगे । गुस्से के कहे हुए शब्द दुःखजनक होते हैं । मुक्के के बदलेमें मुक्का सहना पड़ेगा । ५

जैसे पांव के नीचे रोंधे हुए अर्थात् टूटे हुए घंटे में से आवाज नहीं निकलती इसी प्रकार यदि तू भी न बोले तो तुझे निर्वाण पद जरूर मिलेगा क्रोध तुझसे दूर भागेगा । ... ६

जैसे ग्वाला अपनी लकड़ी के साथ गायों को बाड़े में हांक ले जाता है इसी प्रकार जरा और मृत्यु मनुष्य के जीवन को हांक ले जाता है । ... ७

मूर्ख मनुष्य जब बुरा काम करता है तो उसे उसका ज्ञान नहीं होता लेकिन दुष्ट मनुष्य बुरे कर्मों से इस प्रकार जलता है मानो अग्नि उसे जला रही है । ... ८

जो निर्दोष और निरपराधी मनुष्यों को दुःख पहुँचाता है उसे नीचे बताई हुई दस स्थितियों में से कोई एक जरूर मिलेगी । ... ९

उसे दारुण दुःख मिलेगा, उसका भारी नुकसान होगा, उसे शारीरिक हानि पहुँचेगी, असह्यवेदना भोगेगा, उसे मानसिक चिन्ता रहेगी, उसे राज-दण्ड मिलेगा, उस पर भयंकर आरोप लगेगा, उसके सम्बन्धियों का वियोग होगा, उसका खजाना नष्ट होवेगा, अथवा उसके घर बिजली के गिरने से जल जायँगे, और जब उसके शरीर का नाश होगा तब वह मूर्ख घोर नरक में जायगा । ... १०

जिस पुरुष ने तृष्णाओं को वश में नहीं किया उसका नंगा रहना, जटा बढ़ाना, मैला रहना, उपवास करना, जमीन पर पड़े रहना, शरीर पर भस्म रमाना, और मौनी बन कर बैठना यह सब बातें उसे पवित्र नहीं बना सकतीं । ११

वह जो अच्छे वस्त्र पहिनने के साथ साथ शांत है, स्थिर है, जितेन्द्रिय है, संयमी है, पवित्र है, और दूसरों के दोष देखने की आदत नहीं रखता सचमुच वह ब्राह्मण, श्रमण अथवा भिक्षु है । ... १२

जैसे अच्छी प्रकार सधे हुये घोड़े को चाबुक की जरूरत नहीं है क्या इस संसार में ऐसा कोई विनयसम्पन्न जितेन्द्रिय पुरुष है जिसे निन्दा की परवाह न हो ? १३

अच्छी प्रकार सधा हुआ घोड़ा जैसे चाबुक लगते ही चंचल और उत्साही बन जाता है उसी प्रकार श्रद्धा, सच्चरित्रता,

उत्साह, ध्यान तथा धर्म का ज्ञान इन सब साधनों द्वारा आप चंचल और उत्साही बन कर दुःख का नाश कीजिये और ज्ञान तथा आचरण में निपुण बनिये और कभी भी इन श्रेष्ठ नियमों को न भूलिये । ... १४

नहर बनाने वाले अपनी इच्छानुसार पानी को ले जाते हैं; बाण बनाने वाले अपनी इच्छानुसार बाण को टेढ़ा कर लेते हैं; बढ़ई लकड़ी के लट्ठे को टेढ़ा कर लेते हैं; इसी प्रकार बुद्धिमान अपनी इच्छानुसार अपने आप को ढाल लेते हैं ।” ... १५

ग्यारहवाँ प्रकरण

जरा वर्ग

अपने प्रिय शिष्य आनन्द के साथ भगवान बुद्धदेव एक दिन बैठे बातें कर रहे थे । इतने में एक नवयुवक भिक्षु एक वृद्ध मनुष्य का हाथ पकड़े हुये पूज्य गुरुदेव जी के पास आया । वह वृद्ध पुरुष अत्यन्त दुखी था और बहुत दूर से भगवान के दर्शनार्थ आया था । उसके मन को शांत करने के लिये भगवान ने उसे अपनी मधुर वाणी में यह अमृतमय वचन सुनाये:—

“यह संसार जल रहा है, इसमें हँसी और खुशी के लिये स्थान कहाँ ? ऐ संसारी लोगो तुम अंधकार से आच्छादित हो, क्यों तुम प्रकाश की तलाश नहीं करते ? ... १

एक दूसरे से मिले हुये घावों से पूण, बीमार, चिंताओं में डूबे हुये, दुर्बल और शक्तिहीन, कपड़ों से ढके हुये, इस मांस के पिण्ड को देखो । २

यह शरीर नाशवान, व्याधिपूर्ण और अनित्य है । यह बुराइयों का ढेर छिन्न भिन्न होनेवाला है, इसका परिणाम मौत है । ३

पतझड़ में फैंकी हुई लौकी की तरह इन सफ़ेद हड्डियों के देखने में क्या खुशी मालूम होती है ? ... ४

हड्डियों का ढांचा बन जाने के बाद यह मांस और रूधिर से ढांप दिया जाता है और उसमें बुढ़ापा और मृत्यु, अभिमान और कपट निवास करते हैं । ... ५

‘बादशाहों के चमकीले रथ नष्ट हो जाते हैं, इस प्रकार शरीर भी नाश के निकट पहुँचता जाता है लेकिन साधु पुरुषों के सद्गुण कभी भी विनाश के निकट नहीं पहुँचते,’ इस प्रकार एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुष से कहता है । ... ६

जिस मनुष्य ने कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं की वह बैल की तरह बूढ़ा हो जाता है उसका मांस तो बढ़ता है लेकिन ज्ञान नहीं । ... ७

इस मन्दिर के बनाने वाले की तलाश में उस समय तक मुझे अनेक जन्मों के चक्र में घूमना पड़ेगा जब तक कि मुझे उसका पता न लग जाय मुझे लगातार कई जन्मों के चक्र में गुजरना होगा और बार बार का जन्म लेना कष्टपूर्ण है । लेकिन ऐ इस मन्दिर के बनाने वाले ! तुझे मैंने देख लिया है अब आगे को तू इस मन्दिर को नहीं बनाने पावेगा । ८

तेरे सब खम्बे टूट गये हैं, तेरा केन्द्रस्थ स्तम्भ दो टूंक हो गया है; मन अनादि निर्वाण पद के निकट पहुँच कर सब प्रकार की वासनाओं से मुक्त हो चुका है । ... ९

जिन्होंने अपने जीवन की उचित व्यवस्था नहीं रखी और जिन्होंने अपनी जवानी में धर्मरूपी धन संचय नहीं किया वे मनुष्य मछलियों से खाली भील में रहने वाले बूढ़े बगलों की तरह नाश हो जाते हैं । ... १०

वे मनुष्य जिन्होंने अपने जीवन की उचित व्यवस्था नहीं रखी और जिन्होंने जवानी में धर्म रूपी धन संचय नहीं किया वे टूटी हुई कमान की तरह अपनी बीती हुई दशा पर आँहें भरते हुये पड़े रहते हैं ।” ... ११

बारहवाँ प्रकरण

आत्म वर्ग



एक नवयुवक भिक्षु ने हाथ जोड़ कर नम्रतापूर्वक भगवान बुद्धदेव जी से इस प्रकार निवेदन किया, “पूज्यदेव ! आप मुझे आत्मसुधार की शिक्षा दीजिए ताकि मैं दूसरों को अच्छे मार्ग पर ले जा सकूँ । आत्मसंयम का सरल मार्ग यदि आप मुझे बतायेंगे तो मेरा बड़ा उपकार होगा ।”

भगवान ने उत्तर दिया:—

“यदि मनुष्य अपने आप को प्यारा समझता है तो उसे बड़ी सावधानी से अपनी खबरदारी करनी चाहिये; तीन पहरों * में से कम से कम एक पहर बुद्धिमान पुरुष को सावधान रहना चाहिये । १

प्रत्येक मनुष्य पहले अपने आप को उचित काम में लगावे, बाद में वह दूसरों को उपदेश करे, इस प्रकार बुद्धिमान पुरुष कोई कष्ट नहीं उठावेगा । २

* तीन पहर अथवा अवस्थाएँ:—वाह्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था ।

प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि पहिले वह स्वयं उस नसीहत के अनुसार चले जिसके मुताबिक वह दूसरों को बनने का उपदेश देता है, तब अपने आपको संयमी बनाने के कारण वह दूसरों को अपने वश में कर सकता है, सचमुच अपने पर विजय प्राप्त करना बड़ा कठिन है । ... ३

जो स्वयं अपना स्वामी है उसका दूसरा कौन स्वामी बन सकता है ? खुदी को भली प्रकार जीत लेने से मनुष्य को उस दुर्लभ स्वामी के दर्शन हो सकते हैं । ... ४

मनुष्य की खुदकी की हुई, अपनी ही पैदा की हुई, अपनी ही बढ़ाई हुई बुराई मूर्ख पुरुष को उसी प्रकार पीस डालती है जैसे हीरा कीमती पत्थर को । ... ५

किसी वृक्ष के इर्द गिर्द जैसे लता फैल कर उसे झुका लेती है उसी प्रकार जिसकी धूर्तता की मात्रा बढ़ गई है उसे वह धूर्तता उस नीच अवस्था में पहुँचा देती है जहाँ उसका शत्रु उसे ले जाना चाहता है । ... ६

बुरे तथा हानिकारक कर्म करने बड़े आसान हैं जो शुभ-कर्म लाभदायक हैं उनका करना मुश्किल है । ... ७

जो मूर्ख पुरुष असत्य मार्ग का अवलम्बन कर पूज्य अर्हंत, धर्मपरायण आर्य्यपुरुष तथा सच्चरित्र पुरुष के उपदेशों का

तिरस्कार करता है वह कथक वृक्ष की तरह अपने नाश के कारणों को स्वयं उत्पन्न कर लेता है । ८

मनुष्य स्वयं ही बुराई के बीज बोता है और स्वयं ही उसका फल भोगता है, मनुष्य खुद ही बुराई का त्याग करने वाला है और स्वयं ही अपनी शुद्धि करने वाला है । साधुता और दुष्टता मनुष्य के अपने हाथ में है, कोई दूसरे को शुद्ध नहीं कर सकता । ९

दूसरे का कर्तव्य चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो उसकी खातिर मनुष्य को अपने कर्तव्य का त्याग करना उचित नहीं । एक बार अपना कर्तव्य भली प्रकार समझ कर मनुष्य को उसे ध्यान पूर्वक करना चाहिये ।' १०

तेरहवाँ प्रकरण

लोक वर्ग

एक धनवान् व्यापारी ने भगवान् बुद्धदेव जी के गुणों की अत्यन्त प्रशंसा सुनी । कुछ ज्ञानोपदेश सुनने की इच्छा से उसने भगवान् को अपने घर में निमंत्रण देने का विचार किया । उसके सौभाग्य से बुद्धदेव जी ने उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया । भोजनोपरांत जब व्यापारी अपने इष्ट मित्रों सहित उपदेश सुनने के लिये भगवान् के चरणों में बैठा तो उस समय भगवान् बुद्धदेव जी ने यह अनमोल वचन कहे—

“बुरा काम मत करो ! बेसमझी के तरीके का चलन मत रक्खो ! झूठे नियमों के अनुसार मत चलो ! नाशवान संसार का मित्र मत बनो । १

उठ बैठो ! सुस्त मत बनो ! नेकी के उसूलों के मुताबिक चलो ! सद्गुणी मनुष्य इस लोक तथा परलोक में सुखी रहता है । २

सद्गुण नियमों का पालन करो; पाप के मार्ग पर मत चलो । सगुद्णी इस लोक तथा परलोक में आनन्द में रहता है । ३

संसार को पानी के बुलबुले की तरह समझो, संसार को मृगतृष्णावत् ख्याल करो; जो इस प्रकार सांसारिक वस्तुओं को तुच्छ समझता है यमराज को उसके दर्शन नहीं होते । ... ४

आओ, बादशाहके रथ की तरह चमकते हुए इस भवसागर को देखो; मूर्ख इसमें डूबे हुए हैं परन्तु बुद्धिमान इसका स्पर्श भी नहीं करते । ५

जो पहिले विवेकशून्य (जल्दबाज़) रहा हो और बाद में विचारशील हो जाये तो वह मेघों से मुक्त चांद की तरह जगत को प्रकाशित करता है । ६

यह जगत अंधकारमय है, थोड़े ही पुरुष इसे देख सकते हैं, पिंजरे से छूटे हुए पक्षियों के भाँति थोड़े ही इससे छूट सकते हैं । ७

राजहंस सूर्य के मार्ग में चलते हैं, वे अद्भुत शक्ति द्वारा आकाशमें विचरते हैं; बुद्धिमान लोग इसी भाँति ससैन्य कामदेव को पराजित कर संसार से बाहर जाते हैं । ... ८

जिसने धर्म को उल्लंघन कर दिया है, और झूठ बोलता है, और परलोक का हँसी मज़ाक उड़ाता है, ऐसा मनुष्य किसी प्रकार के पाप करने से न डरेगा । ९

जिनमें उदारता नहीं है वे कृपण, देवलोक को नहीं जाते ।
केवल मूर्ख ही दानशीलता की प्रशंसा नहीं करते, बुद्धिमान
दानशीलता से हर्षित होता है और इसके द्वारा परलोक में शांति
लाभ करता है । १०

पृथ्वी पर के राजा होने, स्वर्ग जाने, सब लोगों का आधि-
पत्य होने की अपेक्षा पुण्यस्रोत (निर्वाण) की पहिली सीढ़ी
पर पहुँचना श्रेष्ठतर है ।” ११

चौदहवाँ प्रकरण

बुद्ध वर्ग

एक दिन कुछ भिक्षु लोग विहार में बैठे हुये बुद्धत्व पद के विषय में आपस में वार्तालाप कर रहे थे। जब भगवान् तथागत महाराज विहार के अंदर आये तब सब भिक्षु भक्ति-भाव से उठ खड़े हुये। भगवान् के पूछने पर आनन्द ने निवेदन किया—
“ भगवन् ! बुद्धत्व पद के विषय में हमारी आपस में बातें हो रही थीं। कृपा कर आप अपने श्रीमुख से कुछ हमें इस संबंध में उपदेश दीजिये ”। भगवान् बुद्धदेव जी ने कहा:—

“जिसके विजय का फिर पराजय नहीं होता है, जिसके विजय का कोई भागीदार इस संसार में नहीं हो सकता, ऐसे अगम्य, त्रिकालज्ञ बुद्ध को आप कौनसा पथ दिखला सकते हैं ? १

जिसे विषैली और बंधनयुक्त वासना कुमार्ग पर नहीं ले जा सकती ऐसे अगम्य, त्रिकालज्ञ बुद्ध को आप कौनसा पथ दिखला सकते हैं। २

जो प्रबुद्ध (जागृत) और अप्रमत्त (न भूलने वाले) हैं, जो ध्यान में मग्न रहने वाले हैं, जो धीमान् हैं, और जो एकांत

सुखमें आनन्द मनाते हैं, ऐसे सत्पुरुषों के साथ देवता भी स्पर्धा करते हैं । ... ३

मनुष्यजन्म पाना दुर्लभ है, मनुष्य का जीवन दुर्लभ है । सत्यधर्म का सुनना दुर्लभ है, बुद्ध का जन्म तथा बुद्धत्व पद की प्राप्ति दुर्लभ है । ४

कोई पाप न किया जावे, भलाई की जाय, और अपने मन की शुद्धि की जाय, यह उपदेश सब बुद्धों का है । ... ५

बुद्ध कहते हैं कि धैर्य महान तप है, सहनशीलता निर्वाण का सब से श्रेष्ठ स्वरूप है, जो दूसरों को मारता है वह सन्यासी नहीं है, जो दूसरों का अपमान करता है वह तपस्वी (श्रमण) नहीं है । ... ६

न निन्दा करना, न मारना, धर्म के अनुसार जितेन्द्रिय रहना, खाने में मिताहारी होना, एकांत में बैठना और सोना और उच्च विचारों का चिन्तन करना,—यह बुद्धों का उपदेश है । ७

सोने के सिक्कों की वर्षा भी हो जाय तो भी तृष्णा शांत नहीं होती; जो जानता है कि तृष्णा का मज़ा क्षणिक है और दुःखदायी है वही बुद्धिमान है; उसे स्वर्गीय सुखों में भी कोई संतोष नहीं होता, जो शिष्य पूर्णजागृत अवस्था में है वह सब तृष्णाओं के नाश करने में आनन्द मानता है । ... ८

भय से भागे हुए मनुष्य पर्वतों, जंगलों; बनों और पवित्र वृक्षों का आश्रय लेते हैं । ... ६

लेकिन यह सुरक्षित आश्रय नहीं है, यह सर्वश्रेष्ठ आश्रय नहीं है । ऐसे आश्रयों में जाने के बाद मनुष्य दुःख से छूट नहीं जाता । ... १०

वह जो भगवान बुद्ध, उसके धर्म, उसके संघ का आश्रय लेता है, वह जो सम्यक ज्ञान के साथ चार पवित्र सत्यों—दुःख, दुःख का कारण, दुःख का नाश, और दुःख का नाश करने वाला पवित्र अष्टविध मार्ग—को देखता है उसने सुरक्षित आश्रय ग्रहण किया है, यही श्रेष्ठतम आश्रय है, इस आश्रय की शरण लेने पर मनुष्य सब प्रकार के दुःखों से मुक्त हो जाता है । ११

अलौकिक पुरुष अर्थात् बुद्ध का मिलना आसान नहीं, वह सब जगह उत्पन्न नहीं होता । जहां इस प्रकार का महात्मा उत्पन्न होता है उस वंश की वृद्धि होती है । १२

बुद्ध का आगमन सुखदायक है, सद्धर्म का उपदेश सुखदायक है, संघ की शांति सुखदायक है । जो स्थिरचित्त हैं उनकी भाक्ति सुखदायक है । ... १३

जो पूजा करने के योग्य अथवा बुद्ध शिष्य की पूजा करता है, जिसने कामदेव की फौज को जीत लिया है, और जिसने दुःख के समुद्र को पार कर लिया है, जिसको मुक्ति मिल गई है, जो निर्भय बन गया है, उसके पुण्य का माप किया नहीं जा सकता ।” १४

पन्द्रहवाँ प्रकरण

सुख वर्ग

दो नवयुवक भिक्षुओं में आपस में किसी बात पर झगड़ा हो गया; उस झगड़े के कारण उन दोनों में बोल चाल बंद हो गई । दोनों के इस विषाद को दूर करने तथा अन्य भिक्षुओं के हृदयों को प्रफुल्लित करने के लिये भगवान् बुद्ध-देवजी ने संघ के सामने यह मधुर वचन कहे—

“जो हम लोगों से द्वेष करते हैं उनसे हम लोगों को द्वेषरहित होकर आनन्दपूर्वक रहना चाहिये । हम लोगों को चाहिये कि द्वेष करने वाले मनुष्यों में द्वेषरहित होकर रहें । १

पीड़ित मनुष्यों में हमें पीड़ा से रहित होकर सुखपूर्वक रहना चाहिये ! पीड़ित पुरुषों के मध्य में हमें पीड़ा से रहित होकर रहना चाहिये ! २

लोभी मनुष्यों में हमें लोभ से रहित होकर सुखपूर्वक रहना चाहिये ! उन मनुष्यों के बीच में जो लोभी हैं हमें लोभ से रहित हो कर रहना चाहिये ! ३

कोई वस्तु हमारी नहीं है, ऐसा मान कर हम सुखपूर्वक रहें ! तब हम सुखभोग करने वाले तेजस्वी देवताओं की तरह होंगे ! ४

विजय, घृणा उत्पन्न करता है क्योंकि परास्त होने वाला दुःखी रहता है; जिसने जय और पराजय दोनों का त्याग कर दिया है ऐसा संतोषी पुरुष सुखी है । ... ५

विषय भोग की इच्छा के बराबर कोई अग्नि नहीं; द्वेष जैसी भगड़े की कोई खानि नहीं; इस शरीर के बराबर कोई दुःख नहीं; शान्ति से बढ़ कर कोई सुख नहीं । ... ६

रोगों में बड़ा रोग भूख है, दुःखों में बड़ा दुःख शरीर है; यह निश्चित तौर से जान लेना चाहिये, कि सब सुखों में सर्व श्रेष्ठ सुख निर्वाण है । ७

आरोग्यता सब से बड़ी बख़्शिश है, संतोष सबसे बड़ा धन है; विश्वास सब से उत्तम सम्बन्ध है, निर्वाण सबसे बड़ा सुख है । ८

जिसने एकांत मुख तथा शांति का रसास्वादन कर लिया है, और जिसने धर्मामृत पान कर लिया है वह भय तथा पाप से मुक्त है । ... ९

श्रेष्ठ-गुण-सम्पन्न आर्य्यों के दर्शन शुभ हैं, उनके साथ रहना सदा सुखदायक है; यदि मनुष्यों को मूर्खों के दर्शन न हों तो वह निश्चय ही सुखी रहेगा । १०

जो मूर्खों की संगत में घूमता है, उसे बहुत काल तक दुःख सहना पड़ता है; मूर्खों के साथ सहवास वैसा ही दुःखदायक है जैसे शत्रुओं के साथ; स्वजनों के मिलने के समान ज्ञानी का संग सुखदायी होता है । ११

इसलिये पुरुष को बुद्धिमान्, प्रज्ञावान्, परिणत, वैद्यवान्, कर्तव्यपरायण, महात्मा का अनुसरण करना चाहिये; जैसे चांद तारागणों के पथ का अनुसरण करता है उसी प्रकार मनुष्य को सदाचारी और धीमान् पुरुष के पीछे चलना चाहिये ।”

सोलहवाँ प्रकरण

आसक्त वर्ग



भगवान् बुद्धदेव जी की आज्ञा लेकर उनका प्रिय शिष्य आनन्द एक बार पर्यटन करने के लिये निकला । छै महीने के बाद जब वह लौटकर आया तो उसने पूज्य गुरुदेवजी को अपने अनुभव की बातें सुनाई । समाजमें फैले हुये राग, द्वेष, मोह, तृष्णा इत्यादि दुर्गुणों के दुःखजनक दृश्यों ने बेचारे आनन्द को बड़ा दुःखित किया था । भगवान् बुद्धदेवजी ने उसकी बातें सुन कर उसे इस प्रकार समझाया—

“जो पुरुष अपने जीवन के सच्चे आदर्शको भुलाकर थोथी बातों में डूब जाता है, जो ध्यान में अपने समय को नहीं लगाता है, और जो इन्द्रियसुख में फँसा रहता है, वह मनुष्य आगे चल कर पवित्र विचारों का ध्यान करने वाले पुरुष के साथ स्पर्धा करेगा । १

मनुष्य को प्रिय अथवा अप्रिय वस्तुकी खोज में कभी न लगना चाहिये । क्योंकि प्रिय वस्तु के न मिलने से दुःख होता है और अप्रिय वस्तु के देखने से दुःख होता है । ... २

इसलिये कोई पुरुष किसी वस्तु में आसक्त न हो क्योंकि प्रिय वस्तुका वियोग दुःख है । जो किसी वस्तु के प्रेम में आसक्त नहीं होते और न किसी वस्तुसे घृणा करते हैं वे बंधनमुक्त हैं । ३

आसक्त से शोक उत्पन्न होता है, आसक्त से भय उत्पन्न होता है; जो आसक्त से छूट गया है वह न शोक और न भय--दोनों को ही-नहीं जानता । ... ४

स्नेह से शोक उत्पन्न होता है, स्नेह से भय उत्पन्न होता है; जो स्नेह से मुक्त है वह न तो शोक और न भय को ही जानता है । ... ५

विषय भोग से शोक उत्पन्न होता है, विषय भोग से भय उत्पन्न होता है; जो विषय भोग (मैथुन की इच्छा) से मुक्त है वह न शोक और न भय ही जानता है । ... ६

काम से शोक उत्पन्न होता है, काम से भय उत्पन्न होता है; जो कामचेष्टा से मुक्त है वह न शोक और न भय को ही जानता है । ... ७

तृष्णा से शोक उत्पन्न होता है, तृष्णा से डर उत्पन्न होता है; जो तृष्णा से मुक्त है वह न शोक और न डर को ही जानता है । ... ८

जिसमें सद्गुण और बुद्धि है, जो न्यायशील है, सत्य वक्ता है, और जो अपना कर्तव्य पालन करता है, ऐसा पुरुष विश्व का प्यारा होगा । ... ६

जिसमें अमृत-पद-निर्वाण की इच्छा उत्पन्न हो गई है, जो मन में संतुष्ट है, जिसके विचार मोह से भ्रमित नहीं हुये हैं वह ऊर्ध्व स्त्रोतस् (अमृत के स्नान में ऊपर की तरफ बढ़ा हुआ) कहलाता है । ... १०

जो पुरुष दीर्घकाल तक दूर (अपने घर से दूर) चला जाये और वहां से सकुशल लौट आवे तो उसके सम्बन्धी, प्रिय और प्रेमी उसको नमस्कार करते हैं । ... ११

इसी प्रकार जो शुभ कर्म करता है और जो इस लोक को छोड़ कर अर्थात् देह त्याग कर दूसरे लोक को चला जाता है, उसके शुभ कर्म उसका वैसा ही स्वागत करते हैं जैसे सम्बन्धी दूर से लौटे हुये अपने मित्र का ।” ... १२

सतरहवाँ प्रकरण

क्रोध वर्ग



क्रोध के आवेश में आकर नवयुवक भिक्षु राहुल बहुत से अनुचित वचन कह दिया करता था । भगवान् बुद्धदेव जी के पास उसकी कई बार शिकायत पहुँची । एक दिन जब बहुत से नवयुवक भिक्षु भगवान् का उपदेश सुनने के लिये विहार में एकत्रित थे तो उस समय पूज्य गुरुदेव जी ने यह अत्यन्त शिक्षा-प्रद उपदेश देकर उनके हृदयों को प्रफुल्लित किया—

“मनुष्य को चाहिये कि वह क्रोध को त्याग दे, वह अहंकार को छोड़ दे, सब बंधनों से मुक्त हो जाये । उस पुरुष को किसी प्रकार के दुःख नहीं सताते जो नाम और रूप में फँसा हुआ नहीं है, और जो किसी भी वस्तु को अपना नहीं कहता !

... .. १

जो दौड़ते हुए रथ की तरह आये हुए क्रोध के आवेश को रोक लेता है उसी को मैं सच्चा सारथी कहता हूँ; दूसरे लोग केवल बागडोर ही पकड़े हुए हैं ।

... .. २

मनुष्य क्रोध को प्रेम से वश में करे, बुराई को भलाई से जीते, लोभी को उदारता से वश में करे, और झूठे को सचाई से स्वाधीन करे ।

... .. ३

सत्य बोलिये, क्रोध को न आने दीजिये; यदि कोई थोड़ी बस्तु के लिये याचना करे तो उसे दे दीजिये; इन्हीं तीन सीढ़ियों से आपको देवताओं का धाम प्राप्त हो सकता है । ४

वे धर्मात्मा पुरुष जो दूसरों को हानि नहीं पहुंचाते हैं; और जो सदा अपने शरीर को वश में रखते हैं; वे अविनाशी निर्वाण पद को प्राप्त करते हैं; जहां पहुंचने से सब प्रकार के शोक मोह की निवृत्ति हो जाती है । ५

जो सदा जागृत रहते हैं, जो दिन रात अध्ययन में लगे रहते हैं, और जो निर्वाण के लिये यत्न करते हैं उनकी विषय-वासनायें समाप्त हो जायंगी । ... ६

हे *अतुल, यह कथन आज का नहीं बल्कि पुराने समय से चला आता है, 'जो चुप चाप बैठा रहता है लोग उसकी निन्दा करते हैं, जो ज़्यादा बोलता है लोग उसकी निन्दा करते हैं, जो बहुत थोड़ा बोलता है लोग उसकी भी निन्दा करते हैं, संसार में कोई ऐसा नहीं हुआ जो निन्दा से बचा हो' । ७

संसार में ऐसा कोई न है न हुआ और न होगा जिसकी सदा बुराई हुई हो, या जिसकी सदा प्रशंसा हुई हो । ८

* भगवान् बुद्ध के एक शिष्य का नाम है ।

जो निष्कलंक है, जो धीमान् है, जो ज्ञानसम्पन्न और सद्गुणी है, और जिसकी विवेकी पुरुष निरंतर नित्यप्रति प्रशंसा करते हैं, ऐसे पुरुष की निन्दा कौन कर सकता है क्योंकि वह तो जम्बू नदी में से निकले हुये स्वर्ण सिक्के की तरह शुद्ध है ? देवता भी उसकी प्रशंसा करते हैं और ब्राह्मण भी उसका यश गाते हैं । ... ६

शारीरिक क्रोध से सावधान रहो, और अपने शरीर को वश में रखो ! शरीर के दोषों का त्याग करो और अपने शरीर से सद्गुणी जीवन व्यतीत करो । १०

जीभ के क्रोध से सावधान रहो, और अपनी जीभ पर काबू रखो ! जीभ के पापों का त्याग करो, और अपनी जीभ से सद्गुणों का अभ्यास करो । ११

मानसिक क्रोध से सावधान रहो, और अपने मन को काबू में रखो । मानसिक दोषों को दूर करो, और मन से शुद्ध जीवन व्यतीत करो । १२

जो ज्ञानी पुरुष इस प्रकार अपने शरीर, अपनी जीभ और अपने मन को वश में रखता है वही बड़ा जितेन्द्रिय, संयमी और यती पुरुष है । ” ... १३

अठारवाँ प्रकरण

अशुद्धता वर्ग

एक पुरुष बड़ा व्यभिचारी और शराबी था। भगवान् बुद्ध के गुणों की प्रशंसा सुनकर उसके हृदय में उनके दर्शन करने की लालसा उत्पन्न हुई। वह कई बार भगवान् के दर्शन करने के लिये विहार में आया परन्तु उसको भिक्षुओं ने अंदर न जाने दिया। एक दिन जब भगवान् बुद्ध भिक्षा के लिये जा रहे थे तो उसने भगवान् के चरण पकड़ लिये और प्रार्थना की कि इस अधम का भी उद्धार कीजिये। भगवान् ने उसे बड़े प्रेम से उठाया और दूसरे दिन सन्ध्या के समय विहार में आने के लिये कहा। उनकी आज्ञा पाकर वह पुरुष ठीक समय पर मठ में पहुँचा। उस समय सब भिक्षुओं को एकत्रित कर पूज्य देव जी ने यह अमृतमय वचन सब को सुनाये—

“तुम अब पके हुये पान-पत्र की तरह हो, यमदूत तुम्हारे पास आया हुआ है; तुम मौत के द्वारजे पर खड़े हो, और तुमने अपनी यात्रा के लिये किसी प्रकार की भी तैयारी नहीं की है। १

तुम अपने लिये एक द्वीप बनाओ, खूब मेहनत करो, और बुद्धिमान् बनो ! जब तुम्हारे दुर्गुण दूर हो जायेंगे और तुम दोष

से मुक्त हो जाओगे तभी तुम आर्यों के पवित्र धाम में प्रवेश कर सकोगे । २

तेरा जीवन पूरा होने को है, और तू मृत्यु के निकट है, मार्ग में तेरे विश्राम के लिये कोई स्थान नहीं है, और सफ़र के लिये तेरे पास कोई सामान नहीं है । ... ३

तुम अपने लिये एक द्वीप बनाओ खूब मेहनत करो और बुद्धिमान् बनो । जब तुम्हारे दुर्गुण दूर होजायेंगे और तुम दोष से मुक्त हो जाओगे तब तुम फिर जन्म मरण के चक्रमें नहीं पड़ोगे । ... ४

जैसे सुनार सोने चांदी के मेल को समय समय पर, थोड़ा थोड़ा कर के दूर करता रहता है, बुद्धिमान् को इसी प्रकार अपने हृदय की मलीनता को धीरे धीरे समय समय पर थोड़ा थोड़ा कर के दूर करते रहना चाहिये । ५

लोहे से जो जंग उत्पन्न होता है जब वह लोहे पर चढ़ता है, तब वह लोहे को खा जाता है; इसी प्रकार सत्य-मार्ग का उल्लंघन करने वाले का अपना काम ही उसकी दुर्गति करता है । ६

अभ्यास (नित्य प्रति साधना) न करना यह साधना का कलंक है; मकान का कलंक उसकी मरम्मत न करना है; शरीर का कलंक आलस्य है; और चौकीदारका कलंक असावधानी है । ७

स्त्रियों का कलंक व्यभिचार है, दानी का कलंक कंजूसी है; सब पापों का मार्ग इस लोक तथा पर लोक में कलंकपूर्ण है । ८

लेकिन इन सब कलंकों से बदतर एक और कलंक है,— सब से बड़ा कलंक अविद्या है । ओ भिक्षुओ ! इस अविद्या के कलंक को दूर कर निष्कलंक बन जाओ । ९

जो निर्लज्ज है, जो कौए की तरह ढीठ है, जो शरारती है, जो दूसरों का अपमान करने वाला है, जो उद्धत है, और जो लुब्ध है, ऐसे पुरुष की जीवनयात्रा बड़ी आसान मालूम होती है (लेकिन हकीकत में वह है नहीं) १०

लेकिन जो नम्र है, जो सदा पवित्रता का अभिलाषी है, जो निस्स्वार्थी है, जो शांत है, जो निष्कलंक है और जो बुद्धिमान् है, ऐसे पुरुष के लिये जीवनयात्रा बड़ी कठिन मालूम होती है । ११

जो प्राणियों की हिंसा करता है, जो मिथ्यावादी है, जो बगैर दूसरे के दिये हुए किसी की चीज को ले लेता है, जो परस्त्री-गमन करता है, जो नशीली शराबादि वस्तुओं का सेवन करता है, वह पुरुष इस लोक में ही अपनी जड़ खोद डालता है । १२

हे मनुष्यो, जिसे अपने ऊपर काबू नहीं है, उसकी दशा बहुत खराब है; इसलिये देखना कहीं दुराचरण और लोभ बहुत काल के लिए दुःख के गहरे गढ़े में न डाल दें । १३

लोग अपनी श्रद्धा अथवा मर्जी के अनुसार दान देते हैं: यदि कोई मनुष्य दूसरों को दिए हुए अन्नजल को देख कर मन में जले, तो उसे दिनरात किसी समय भी चैन नहीं मिल सकता । १४

जिस में यह भाव नष्ट हो गया है अर्थात् उसने ऐसे भावको जड़ मूल से निकाल डाला है, उस पुरुष को दिन रात सदैव शांति मिलती है । ... १५

विषयविकार के बराबर कोई जलन नहीं, द्वेष जैसा कोई मगर नहीं; अज्ञान जैसा कोई बंधन नहीं और तृष्णा जैसा कोई प्रवाह नहीं । १६

दूसरों के दोष आसानी से देखे जा सकते हैं, लेकिन अपने दोष देखना बड़ा कठिन है, मनुष्य अपने पड़ोसी के दोषोंको भूसी की तरह छान डालता है, लेकिन अपने दोष को वह इस प्रकार छिपाता है जैसे ठग जुआरियों से खोटे सिक्के को छिपाता है । १७

जो मनुष्य दूसरों के दोष देखता रहता है और जो सदा गुस्से का शिकार बना रहता है उसके विषयविकार बढ़ेंगे, और वह उनके नाश के मार्ग से बहुत दूर हो जाता है । १८

हवा में होकर जाने के लिये कोई मार्ग नहीं अर्थात् धर्म का मार्ग सूक्ष्म नहीं है; मनुष्य बाहर के आड़म्बर से श्रमण

अर्थात् भिक्षु नहीं बन सकता । दुनियां के लोग बाहरी आडम्बर से प्रसन्न रहते हैं, लेकिन बुद्ध बाहरी आडम्बरों से मुक्त होते हैं । १६

हवा में होकर जाने के लिये कोई मार्ग नहीं अर्थात् धर्म का मार्ग सूक्ष्म नहीं है, मनुष्य बाहर के आडम्बर से श्रमण अर्थात् भिक्षु नहीं बन सकता । कोई प्राणी अमर नहीं है; केवल बुद्ध ही अचल रहते हैं । २०

उन्नीसवाँ प्रकरण

न्याय वर्ग



सोमदत्त नामी क्षत्रिय राजकुमार भगवान् बुद्ध के दर्शन करने आया करता था । उसका स्वभाव बड़ा उदण्ड और अक्खड़ था । प्रायः उसके साथियों का उसके मारे नाक में दम रहता था । एक दिन बात चीत करते हुये उसके एक साथी ने उससे कहा, 'सोम, भगवान् तथागत महाराज ने क्या कभी तुमको सत्य और न्याय के विषय में कुछ उपदेश नहीं दिया ? तुम्हारा अक्खड़पन कैसे दूर होगा ?' सोमदत्त चुप रहा । उस दिन संध्या के समय जब वह भगवान् के दर्शन करने के लिये गया तो उसके सौभाग्य से उस समय सत्य और न्याय की चर्चा हो रही थी । भगवान् बुद्धदेव जी के मुखारविंद से निकले हुये नीचे लिखे वचनों ने सोमदत्त की काया पलट दी । भगवान् ने क्रमाया—

“ वह मनुष्य न्यायशील नहीं है जो बलप्रयोग द्वारा अपनी अर्थसिद्धि करता है; किन्तु, जो न्याय और अन्याय दोनों को भली भांति पहचानता है, जो विद्वान् है, जो दूसरों को बलप्रयोग से नहीं, बल्कि धर्म और नीति से अपने पीछे

चलाता है, और जो सत्य सिद्धांत व विवेक का आश्रय लेता है वही पुरुष न्यायशील है । ... १

बहुत ज़्यादा बोलने से कोई पण्डित नहीं कहला सकता; जो सहनशील है, घृणा और भय से मुक्त है, वही विद्वान् कहलाता है । ... २

मनुष्य अधिक बकवाद करता है इस से वह धर्म का धारण करने वाला नहीं कहलाता; वही पुरुष सचमुच धर्म को धारण करने वाला है जो यद्यपि थोड़ा बोलता है, लेकिन अपने जीवन से उस सिद्धान्त को देखता है, वही धर्म का धारण करने वाला है, जो कभी धर्म की अवहेलना नहीं करता । ३

सिर के बाल सफ़ेद होने से कोई मनुष्य वृद्ध नहीं होता है; उसकी आयु भले ही बड़ी हो लेकिन उसका वृद्ध कहलाना व्यर्थ है । ४

जिसमें सत्य, सद्गुण, प्रेम, संयम और दम है, जो दोषों से मुक्त है और बुद्धिमान् है, वही वृद्ध कहलाता है । ५

जो पुरुष द्वेषी, लोभी, बेईमान है वह बहुत बकवाद से अथवा अपने शरीर की खूबसूरती से साधु नहीं कहला सकता । ६

जिसके यह सब दुर्गुण समूल नष्ट हो गये हैं ऐसा द्वेष रहित बुद्धिमान् मनुष्य सत्पुरुष कहलाता है । ... ७

असंयमी और झूठ बोलनेवाला पुरुष मूढ़ मुड़ालेने से भिक्षु नहीं बनता; क्या वह पुरुष जो कामनाओं और लोभ से जकड़ा हुआ है श्रमण कहला सकता है ? ... ८

जिसने छोटे मोटे सभी पापों को शांत कर दिया है वह पापों को शांत कर देने के कारण श्रमण अर्थात् भिक्षु कहलाता है । ... ९

दूसरों से केवल भिक्षा मांगने से कोई मनुष्य भिक्षु नहीं बन जाता; जो सब नियमों को अङ्गीकार करता है वही भिक्षु है । १०

जो बुराई और भलाई से परे है, जो ब्रह्मचर्य का पालन करता है, जो विवेक द्वारा जगत् में विचरता है वही यथार्थ में भिक्षु है । ... ११

मूढ़ और अज्ञानी मौन धारण कर लेने से मुनि नहीं बन जाता; परन्तु वह ज्ञानी पुरुष जो कसौटी में कस कर भलाई को अपनाता है और बुराई का त्याग करता है वही सच्चा मुनि है; जो इस में दोनों पहलुओं पर विचार करता है वही असली मुनि है । १२

जो प्राणियों की हिंसा करता है वह आर्य्य नहीं कहलाता;
जो सब प्राणियों पर दया रखता है वही आर्य्य है । १३

जिसे कोई संसारी आदमी अनुभव नहीं कर सकता, ऐसा मोक्ष का सुख मुझे प्राप्त होता है; वह सुख केवल वृत्त पालन अथवा अधिक अध्ययन, अथवा समाधि लगाने से, अथवा अकेले सोने से नहीं मिलता । हे भिक्षुओ ! जब तक तुमने तृष्णाओं का अंत नहीं कर लिया है तब तक तुम्हें निश्चित नहीं होना चाहिये । ” १४

बीसवाँ प्रकरण

धर्ममार्ग वर्ग

राजकुमार सिद्धार्थ को, जिस समय गया में बोधी वृक्ष के नीचे, ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध बन गये तो उस समय उनके मन में उस ज्ञान के प्रचार करने की बड़ी जबरदस्त अभिलाषा उत्पन्न हुई। उन्होंने सोचा कि ऐसे शुद्ध आनन्द का सुख अकेले ही उठाना बड़ा भारी स्वार्थ होगा। इस आनन्द को जगत् में बांटना चाहिये, ताकि दूसरे प्राणी भी संसार के दुःखों से छूटकर परम पुनीत निर्वाण धाम की प्राप्ति करें। ऐसे उत्कृष्ट विचारों से प्रेरित होकर वे सत्य धर्म के प्रचार के लिये निकले। जो उपदेश उन्होंने उस समय दिया, जो विशुद्ध मार्ग उन्होंने उस समय अपने भिक्षुओं को बताया, जिस सत्य सिद्धांत का प्रकाश उन्होंने किया, उसकी झलक नीचे लिखे शब्दों में मली प्रकार दीख पड़ती है:—

“सब धर्म मार्गों में अष्टविधि * मार्ग श्रेष्ठतम है; सब सत्त्यों

* अगवान् बुद्ध का बताया हुआ अष्टविधि मार्ग यह है—

१. सम्यक् दृष्टि, २. सम्यक् संकल्प, ३. सम्यक् वाणी, ४. सम्यक् कर्म,
५. सम्यक् आजीविका, ६. सम्यक् उद्योग, ७. सम्यक् विचार, ८. सम्यक् समाधि।

में चार * सत्य उच्चतम हैं, सब सद्गुणों में वैराग्य श्रेष्ठ है; सब मनुष्यों में खुले नेत्रोंवाला जागृत मनुष्य श्रेष्ठ है । ... १

आप की दृष्टि को विवेकपूर्ण बनाने वाला केवल यही मार्ग है दूसरा कोई भी मार्ग नहीं । इस मार्ग पर आप चलिये । मार अर्थात् कामदेव को पराजित करने वाला यही एक मार्ग है । २

यदि आप इस रास्ते पर चलेंगे तो आपके दुःखों का अन्त हो जायगा । राग द्वेष किस प्रकार से दूर किया जाय यह भली प्रकार समझ लेने के बाद मैंने इस मार्ग का प्रचार किया है । ... ३

आप को स्वयं पुरुषार्थ करना चाहिये । तथागत अर्थात् बुद्ध तो केवल उपदेश देने वाले हैं । जो विवेकी पुरुष इस मार्ग का अवलम्बन करते हैं वे कामदेव के जाल से मुक्त हो जाते हैं । ४

‘सब उत्पन्न हुई वस्तुएँ नाशवान् हैं’, वह जो इसे जानता है और अनुभव करता है वह दुःख के प्रति सहनशील बन जाता है; यही विशुद्ध मार्ग है । ५

* १. दुःख का अस्तित्व, २. दुःख का कारण, ३. दुःख की निवृत्ति, ४. दुःख की निवृत्ति करने वाला भगवान् बुद्ध का बतलाया हुआ अष्टविध मार्ग ।

‘पैदा होने वाली सब वस्तुयें दुःख और शोकजनक हैं’, वह जो इसे जानता और अनुभव करता है वह दुःख के प्रति सहनशील बन जाता है; यही विशुद्ध मार्ग है। ... ६

‘सब रूप अनित्य हैं’, वह जो इसे जानता और अनुभव करता है वह दुःख के प्रति सहनशील बन जाता है; यही विशुद्ध मार्ग है। ७

जो जवान और बलवान् पुरुष जागृत होने के समय अपने आप को चैतन्य नहीं करता, जो सुस्त है, जिसकी इच्छाशक्ति और विचार निर्बल हैं ऐसे पुरुष को ज्ञान का मार्ग कभी नहीं मिल सकता। ... ८

अपनी वाणी की देख रेख रख और अपने मन को भली प्रकार स्वाधीन कर मनुष्य को अपने शरीर से किसी प्रकार का भी खोटा कर्म नहीं करना चाहिये। इन तीन मार्गों को अपने सामने स्पष्ट रखने वाला, ज्ञानियों के बताये हुये मार्ग को प्राप्त करेगा। ... ९

उत्साह से ज्ञानकी वृद्धि होती है, उत्साह के अभाव से ज्ञान का हास होजाता है; हानि और लाभ के इन दोनों मार्गों को समझ कर पुरुष अपने आचरण को ऐसा बनावे जिस से उसके ज्ञानकी वृद्धि होसके। १०

केवल एक वृक्ष को ही नहीं बल्कि विषय विकार के सारे जंगल को काट डालिये ! विषय विकार के जंगल में से भय की उत्पत्ति होती है । जब आप विषय विकार के सारे जंगल को इसके इर्द गिर्द के झाड़ू भंकाड़ों सहित काट डालेंगे, तो हे भिक्षुओ ! इस जंगल से निकल जानेके बाद आपको स्वाधीनता प्राप्त होगी । ११

जब तक मनुष्य में स्त्री संग की थोड़ी सी भी इच्छा बनी रहती है, तब तक उसका मन बंधन में उसी प्रकार रहता है, जिस प्रकार दूध पीने वाले बछड़े का अपनी माता गाय में । ... १२

शरद ऋतु के कमल की तरह, आप अपने हाथ से, खुदी के प्रेम को निकाल डालिये । शांति के मार्ग का अवलम्बन कीजिये । सुगत (भगवान् बुद्ध का नाम) ने निर्वाण का मार्ग दिखला दिया है । ... १३

‘वर्षाऋतु, शीतकाल और गर्मियों में मैं यहीं रहूँगा’, मूर्ख इस प्रकार के विचारों में पड़ा रहता है और मृत्यु के विषय में कुछ भी नहीं सोचता । ... १४

जैसे बाढ़ सोये हुये ग्राम को बहाले जाती है उसी प्रकार संतान, धन, दौलत और पशुओं इत्यादि में व्यस्तचित्त पुरुष को मृत्यु लेजाती है । ... १५

जब मृत्यु आ पहुँचती है तब पुत्र, पिता, संबंधी, अथवा जाति के लोगों—किसी की भी मदद काम में नहीं आती। १६

बुद्धिमान् और सच्चरित्र को चाहिये कि इस बात को भली प्रकार जान कर निर्वाण पद के मार्ग को शीघ्र ही साफ करले ।” ... १७

इक्कीसवाँ प्रकरण

विविध वर्ग

भगवान् बुद्ध के योग्य शिष्य सारीपुत्र चम्पारण्य के घोर जंगलों में विचरते थे। उनकी अवस्था ४० वर्ष की थी। अपने पूज्य गुरु के पवित्र धर्म का प्रचार वे घूम घूम कर इस प्रदेश के निवासियों में करते थे। उनकी कथनशैली बड़ी अद्भुत थी और वे श्रोताओं के मन को अपनी ओर शीघ्र आकर्षित कर लेते थे। गण्डकी नदी के किनारे एक दिन सवेरे वे घूम रहे थे। कुछ ग्रामीण लोग उनके दर्शनार्थ वहां पर आये, और हाथ जोड़कर निवेदन किया, “हे श्रमण ! आप हमें पूज्य तथागत महाराज के कुछ अमृतमय उपदेश सुनाइये ताकि हमारा जीवन भी पवित्र हो।” सारीपुत्र बोले, “हे गृहस्थो, जब भगवान् उपदेश दिया करते थे, तो समय समय पर मैं उनके उपदेश टीप लिया करता था। उसी अपने खजाने में से मैं आज आपको पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से कहे हुये उपदेशों को सुनाता हूँ। आप सब ध्यान देकर सुनिये—

“यदि थोड़े सुख के त्याग करने से विशेष सुख मिलता हो तो बुद्धिमान् थोड़े सुख को त्याग कर विशेष सुख के लिये प्रयत्न करे।

....

...

१

जो दूसरों को दुःख देकर अपने लिये सुखप्राप्ति की आकांक्षा करता है वह द्वेष की जंजीर में बंधा हुआ होने के कारण कभी भी द्वेष से मुक्त नहीं हो सकता । ... २

जो करना चाहिये मनुष्य उसे नहीं करते, और जो नहीं करना चाहिये मनुष्य उसे करते हैं; इस प्रकार के असंयमी और प्रमादी मनुष्यों की वासनाएं बराबर बढ़ती रहती हैं ।... ३

लेकिन जो मनुष्य अपने शरीर के सम्बन्ध में सब प्रकार से चैतन्य रहते हैं; जो न करने योग्य काम नहीं करते और करने योग्य काम दृढ़ता से करते हैं ऐसे अप्रमत्त और धीमान् पुरुषों की वासनाओं का अन्त होजाता है । ... ४

* अपने माता पिता को मार डालने वाला, दो क्षत्रिय राजाओं का बध करने वाला और प्रजा सहित सारे राज्य का नाश करने वाला सच्चा ब्राह्मण दण्ड का पात्र नहीं है । ... ५

* अपने माता पिताको मार डालने वाला, दो धर्मात्मा राजाओं का बध करने वाला और इनके अतिरिक्त किसी प्रसिद्ध पुरुष की हत्या करने वाला सच्चा ब्राह्मण दण्डका पात्र नहीं है । ६

* नोट—श्लोक ५ व ६

भगवान् बुद्ध के समय में कर्मकाण्ड का बड़ा जोर था । समाज की सारी सत्ता ब्राह्मणों के हाथ में थी । गरीब से गरीब और बड़े से बड़े चक्रवर्ती राजा को स्वर्ग अथवा नरक में भेजना उनके बाएँ हाथ का खेल था । ब्राह्मण घोर से घोर पाप भी क्यों न करे लेकिन वह दण्ड का पात्र न समझा जाता था । इन दो श्लोकों में भगवान् बुद्ध ने समाज की ऐसी हीनावस्था का चित्र खींच दिया है और ऐसे वर्म-शास्त्रों को धिक्कारा है ।

वे ग्रामीण लोग भिक्षु सारीपुत्र के मुख से इन दो श्लोकों को सुनकर बड़े विस्मित हुए। सारीपुत्रजी उनके चेहरों पर विस्मय के चिह्न देखकर कुछ मुस्कराए और बोले, 'सचमुच आप लोगों का विस्मय स्वाभाविक है। जब मैंने भगवान् के श्रीमुख से, माता पिता का बंध करने वाले, तथा वीर क्षत्रिय राजा को उसकी प्रजासहित मारने वाले ब्राह्मण को दण्ड का पात्र न होने वाली बात सुनी थी तो मुझे भी ऐसा ही आश्चर्य हुआ था। उसका स्पष्टीकरण सहज में ही हो गया जब भगवान् ने आगे चलकर सच्चे ब्राह्मणों के कर्म बतलाये। कर्मकाण्डी ब्राह्मणों की स्मृतियों में ब्राह्मण को अबध्य लिखा है चाहे वह ब्राह्मण अपने माता पिता अथवा किसी प्रसिद्ध पुरुष को मार ही क्यों न डाले। यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों के उसी धर्म-शास्त्रों की ओर इशारा करके भगवान् ने यह वचन भर्तृसना के तौर पर कहे थे, सारीपुत्र के यह वचन सुनकर ग्रामीण लोगों को संतोष हुआ और वे बोले,—'भगवान्, अब आप आगे कहिये'। तब सारीपुत्र ने फिर कहना शुरू किया:—

“गौतम (बुद्ध) के शिष्य निरन्तर चैतन्य रहते हैं और उनके विचार रात दिन निरन्तर बुद्ध पर लगे रहते हैं। ... ७

गौतम (बुद्ध) के शिष्य निरन्तर जागृत रहते हैं और उनके विचार रात दिन निरन्तर धर्म पर लगे रहते हैं। ८

गौतम (बुद्ध) के शिष्य सदैव जागृत रहते हैं और उनके विचार रात दिन संघ पर लगे रहते हैं । ... ६

गौतम (बुद्ध) के शिष्य सदैव जागृत रहते हैं और उनके विचार रात दिन शरीर पर लगे रहते हैं । ... १०

गौतम (बुद्ध) के शिष्य सदैव जागृत रहते हैं और उनके मन रात दिन दया में आनन्द मानते हैं । ११

गौतम (बुद्ध) के शिष्य निरन्तर जागृत रहते हैं और उनके मन रात दिन शुद्ध भावना में आनन्दित रहते हैं । ... १२

संसार को त्याग कर भिक्षु बनना, यह भी कठिन है; संसार में रहना, यह भी कठिन है; मठ में रहना यह भी कठिन है, घर में रहना भी कठिन है; अपने बराबर के पुरुषों में, जहां सब वस्तु बराबर में बांट कर खाई जायें, रहना कठिन है; इसी प्रकार भिक्षु होकर घूमना, यह भी कठिन है । इसलिये पुरुष निरन्तर घूमने वाला भिखमंगा न बने और न दुःखों में पड़े । १३

जहां जहां श्रद्धावान्, सद्गुणी, कीर्तिवान् और धनवान् पुरुष जाता है वहां वहां उसका आदर होता है । १४

सज्जन बरफ़ से ढके हुए पर्वतों, की तरह दूर से ही प्रकाशित होते हैं; और दुर्जन रात में चलाये हुए तीर की तरह किसी की नज़र नहीं पड़ते । ... १५

जो निरन्तर अकेला बैठता है, अकेला सोता है, आलस्य को छोड़ कर अकेला विचरता है और जो अपने आपको बश में करता है वह निर्जन बन में भी अकेला मुख से रहेगा ।” १६

बाईसवाँ प्रकरण

अधोगतिमार्ग वर्ग

एक दिन संध्या के समय भगवान् बुद्ध अपने शिष्य सारी-पुत्र के साथ भागीरथी के किनारे बैठे हुए थे। श्रीगंगा जी बड़े ज़ोरों पर थीं। जल का प्रवाह बड़े वेग पर था। बहुत देर तक चुप चाप भगवान् नदी के प्रवाह को देखते रहे। सारीपुत्र उन को मौन देखकर बड़ी श्रद्धा से नीचे मुख किये बैठे रहे। अंत में भगवान् बोले:—

“असत्य कहने वाला पुरुष नरक में जाता है; स्वयं किसी काम को करनेके बाद यदि मनुष्य यह कहे कि अमुक काम उसने नहीं किया तो वह भी नरक में जाता है। इन दोनों पापी पुरुषों की स्थिति मृत्यु पश्चात् परलोक में बराबर होती है। १

काषाय वस्त्र पहिनने वालों में बहुत से पापिष्ठ और असंयमी होते हैं; इस प्रकार के पापी पुरुष अपने पाप कर्म से नरक में जाते हैं। २

असंयमी और दुराचारी पुरुष को अग्नि में तपाये हुए लोहे के गोले को खा लेना दूसरों की दी हुई भिक्षा पर गुबारा करने के बनिस्वत लाख दर्जे अच्छा है। ... ३

अपने पड़ौसी की स्त्री का अभिलाषी (१) बदनामी (२) निद्रा रहित रात (३) दंड और (४) नरक, इन चार प्रकार के फलों (कड़वे) को भोगता है । ४

परदारा सेवन करने वाले पुरुष को अपकीर्ति और नरक का स्थान मिलता है । उस भयभीत पुरुष को डरी हुई स्त्री के साथ समागम करने से बहुत थोड़ा सुख मिलता है और राजा भी उसे कठिन दंड देता है । इसलिए पुरुष को चाहिये कि पर-स्त्री गमन न करे ।

जैसे कुशा को असावधानी से पकड़ने से हाथ कट जाता है, उसी प्रकार ठीक रूप से सन्यस्त व्रत पालन न करने वाला नरक में जाता है । ६

असावधानी से किया हुआ काम, खण्डित व्रत, और श्रद्धा रहित ब्रह्मचर्य-पालन, इन सबके करने से कोई विशेष लाभ नहीं होता । ... ७

जो कोई भी काम करना हो, तो मनुष्य को वह काम बड़े उत्साह से करना चाहिये । जो यती शिथिल है वह विषय विकार की धूलि को बहुत ज्यादा फैलाता है । ... ८

बुरा काम न करना अच्छा है, कारण कि बुरा काम करने से परचात्ताप होता है, शुभ काम करना अच्छा है क्योंकि उसको

करने के पश्चात् किसी प्रकार का पश्चात्ताप नहीं करना पड़ता । ... ६

सीमा प्रदेश का नगर जिस प्रकार भीतर और बाहर से भली भांति रक्षित रहता है उसी प्रकार अपने आपकी रक्षा करनी चाहिये । एक क्षण भी नहीं खोना चाहिये, क्योंकि समय को नष्ट करने वाले मनुष्य नरक में पड़कर दुःख पाते हैं । ... १०

जो मनुष्य लज्जा न करने योग्य पदार्थों से लज्जा करते हैं और लज्जा करने योग्य पदार्थों से लज्जा नहीं करते, वे इस प्रकार की असत्य दृष्टि रखने के कारण दुर्गति को प्राप्त होते हैं । ... ११

न डरनेवाली जगह से डरने और डरनेवाली जगह से न डरने वाले असत्य दृष्टि युक्त पुरुष दुर्गति को प्राप्त होते हैं । ... १२

जो पुरुष निषेध न करने योग्य काम का निषेध करते हैं और निषिद्ध काम का निषेध नहीं करते, वे असत्य मत का अवलम्बन करने के कारण दुर्गति को प्राप्त होते हैं । ... १३

जो निषिद्ध को निषिद्ध और अनिषिद्ध को अनिषिद्ध जानते हैं ऐसे सत्य मत का अवलम्बन करने वाले पुरुष सुगति को प्राप्त होते हैं । ... १४

तेईसवाँ प्रकरण

हाथी वर्ग

चौमासे की विश्रान्ति पूरी कर भिक्षुओं की मंडली धर्म-प्रचार के लिये निकली । भगवान् बुद्ध उस मंडली के पूज्य नेता थे । बारह मील के लम्बे जंगल को पार कर भिक्षु लोग एक नदी के किनारे पर पहुँचे । निकटवर्ती ग्राम के एक बड़े ज़िमींदार अपने अनुचरों सहित तथागत महाराज के दर्शन करने आये थे । नदी पार करने के लिये हाथियों का प्रबन्ध था । उन बड़े पशुओं की मदद से मंडली ने नदी को पार किया । सामने ज़मींदार महाशय का बड़ा बगीचा था । उसी में भगवान् बुद्ध-देव जी अपने शिष्यों सहित जा विराजे । आम्रकुंज के नीचे श्रोताओं की भीड़ राजकुमार सिद्धार्थ के उपदेशोंको सुननेके लिये एकत्र हुई । उस समय भगवान् ने इस प्रकार उपदेश दिया:—

“जिस प्रकार सेना में, धनुष से फेंके हुये तीर को, हाथी सहन करता है उसी प्रकार मैं शांति से अपमान को सहन करूँगा, क्योंकि संसार दुष्ट स्वभाव वाला है ।... १

वे पालतू हाथी को युद्ध में लेजाते हैं; राजा पालतू हाथी पर बैठता है; जो शांति से अपमान का सहन करता है वही संयमी मनुष्यों में सर्व श्रेष्ठ है । ... २

स्वच्चर यदि पालतू होय तो अच्छा है; सिन्धु घोड़े पालतू होने से श्रेष्ठ होते हैं। बड़े बड़े दांतों वाला हाथी पालतू होने से उत्तम होता है, परन्तु जिसने अपने आपको वश में कर लिया है वह उनसे भी श्रेष्ठ है। ३

क्योंकि इन पशुओं की सहायता से कोई भी अगम्य निर्वाण प्रदेश में नहीं पहुँच सकता, जहाँ संयमी पुरुष, संयमी पशु अर्थात् मन द्वारा ही पहुँच सकता है। ... ४

धनपालक हाथी जिसके कपोलों से मद भरता हो जो मुश्किल से वश में हो सके, जब बांधा जाता है तो एक घ्रास भी नहीं खा सकता क्योंकि वह अपने निवास स्थान का स्मरण करता है। ... ५

यदि मनुष्य स्थूल हो जाये, यदि वह निद्रा के कारण सुस्त बन जाए तो वह मूर्ख कचरा खाने वाले सूअर की तरह बार बार जन्म लेगा। ... ६

यह मेरा मन स्वेच्छानुसार सुखपूर्वक घूमता था लेकिन अब मैं इसे अच्छी तरह अपने वश में रखूंगा, जैसे हाथीसवार (महावत) मस्त हाथी को अंकुश से वश में करता है। ... ७

प्रमत्त दशा में मत रहो, अपने विचारों पर दृष्टि रखो, अपने आपको कीच में फँसे हुए हाथी की तरह बुरे मार्ग से निकालो। ... ८

यदि मनुष्य को बुद्धिमान साथी मिले जो सावधानी से उसके साथ चलने वाला हो तो ऐसे साथी के साथ विचार-पूर्वक सब प्रकार के दुःखों को सहन करते हुए प्रसन्नता पूर्वक चलना चाहिये । ... ९

यदि मनुष्य को उसके साथ चलने वाला कोई बुद्धिमान साथी न मिले तो उसे जंगल में रहने वाले हाथी की तरह अपने विजय किये हुए देश का त्याग करने वाले राजा की तरह अकेला चलना चाहिये । ... १०

मूर्खों के सहवास की अपेक्षा अकेले रहना अच्छा है । मनुष्य को अकेले ही चलना चाहिये । वह कोई पाप न करे । थोड़ी ज़रूरतों के साथ उसे जंगल में रहने वाले हाथी की तरह विचरना उचित है । ११

प्रसंग पड़ने पर मदद करने वाले मित्र आनन्ददायक होते हैं, मिली हुई वस्तु से संतोष मानना सुखकारक है, शुभ कार्य मृत्यु के समय आनन्ददायक होता है, सब प्रकार के शोकों का त्याग सुखकारक है । १२

मातृवर्म सुखदायक है, पितृ धर्म सुखदायक है, संन्यासी की अवस्था सुखदायक है, ब्राह्मण धर्म सुखदायक है । १३

वृद्धावस्था तक रहने वाले सद्गुण सुखदायक हैं, सुदृढ़ श्रद्धा सुखदायक है, ज्ञानप्राप्ति सुखदायक है, पापों का त्याग सुखदायक है ।" ... १४

चौबीसवाँ प्रकरण

तृष्णा वर्ग

विशाली राजा की नगरी में आज बड़ी धूम-धाम थी । भगवान् बुद्ध के आगमन के शुभ समाचार शहर में फैल गये थे । नगर निवासी भगवान् का उपदेश सुनने के लिये एक बड़े चौड़े मैदान में एकत्र हो रहे थे । एक बड़े सुंदर शामियाने के नीचे ऊँची व्यास गद्दी बनी हुई थी जिसके इर्द गिर्द कीमती कालीन बिछे हुए थे । नियत समय पर ठीक संध्या के साढ़े पांच बजे भगवान् की दिव्य मूर्ति अपने शिष्यों सहित आती हुई दीख पड़ी । जय जयकार की ध्वनि से मैदान गूँज उठा । भगवान् के हाथ में भिक्षापात्र था । पैरों पर धूल पड़ी हुई थी, चेहरे पर गम्भीरता छाई थी और आँखों से तेज चमक रहा था । सारे संसार के दुःखों के बोझ को अपने सर पर उठाये सर्व त्यागी भगवान् बुद्धदेव आज विशाली राज्य की जनता को अपना प्रेम संदेश सुनाने आए थे । व्यासगद्दी पर बैठ कर इस महापुरुष ने गंभीर स्वर में उपदेश देना आरम्भ किया—

“प्रमत्त पुरुष की तृष्णा लता की भांति बढ़ती है । जैसे बंदर फल की आकांक्षा से एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर कूदता

फिरता है, इसी प्रकार मनुष्य तृष्णा के वशीभूत हो कर जन्म के चक्कर में घूमता है । ... १

इस जगत् में जिस किसी पुरुष को यह विकराल और विष भरी तृष्णा अपने वश में करलेती है उसके दुःख 'विरण' घास की तरह बढ़ जाते हैं । ... २

इस जगत् में जो पुरुष कठिनाई से वश में होने वाली विकराल तृष्णा को वश में कर लेता है, उसके दुःख कमल के पत्ते पर की पानी की बूंद की तरह गिर जाते हैं । ३

यह कह्याणकर वचन मैं आप से कहता हूँ, आप सब जो यहां इकट्ठे हुए हैं, तृष्णा को समूल उखाड़ डालें, क्योंकि जो उसीरा घास की सुगंधि लेना चाहता है उसे चाहिये कि वह 'विरण' घास को अवश्य उखाड़ दे ताकि शैतान नरकुल घासको धीरे धीरे बहा ले जाने वाली धारा की तरह नष्ट न कर डाले । ४

जैसे कटा हुआ बृक्ष अपनी जड़ के सुरक्षित रहने के कारण बराबर सुदृढ़ बना रहता है और फिर फल निकलता है, इसी प्रकार जब तक तृष्णा के पाप के कारणों को न मिटा दिया जाय तब तक जन्म-मरण का यह दुःख बार बार भोगना पड़ेगा । ५

सुख के प्रवाह में जिसके छत्तीस* प्रकार के आशा रूपी स्रोत बहते हैं उस तुच्छ मति वाले को विषयासक्त विचार रूपी प्रवाह अपनी ओर खींच ले जाते हैं । ६

तृष्णा के स्रोत चारों ओर से बहते हैं । विषय-विकार की लता फूलती फलती है । यदि आप इस लता को फूलता फलता देखें तो ज्ञान के कुल्हाड़े से इसकी जड़ काट डालिये । ७

प्राणी मात्र सुखों में आसक्त और विषयों के भोग में लीन रहते हैं; विषयों में आसक्त और उन्हीं में सुख तलाश करने वाले जन्म-मरण के चक्र में भटकते फिरते हैं । ... ८

तृष्णा के मारे हुए मनुष्य, जाल में फंसे हुए खरगोश की तरह इधर उधर दौड़ते हैं; बन्धन में फंसे होने के कारण वे बहुत काल तक बार बार दुःख भोगते हैं । ९

तृष्णा के मारे हुए मनुष्य, जाल में फंसे हुए खरगोश की तरह इधर उधर दौड़ते हैं; इस कारण भिक्षु को स्वयं निर्विकारी बनने का प्रयत्न करते हुए तृष्णा को दूर भगाना चाहिये । १०

*छत्तीस प्रकार के आशारूपी स्रोत यह हैं:—

चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, त्वचा, मन, रूप, शब्द, गंध, रस, स्पर्श और धर्म । इन बारहों के साथ तीन प्रकार की तृष्णायें काम तृष्णा, भव तृष्णा और वैभव तृष्णा जोड़ देने से छत्तीस प्रकार के स्रोत होते हैं ।

जो विषय विकाररूपी जङ्गल से निकलने के बाद फिर नये सिरे से विषय विकाररूपी जंगल में प्रवेश करता है और जो उस जंगल से निकाले जाने पर फिर जंगल की ओर दौड़ता है ऐसे मनुष्य की ओर देखो जो स्वतन्त्र है, परन्तु बन्धन के पीछे भागता है । ... ११

बुद्धिमान लकड़ी, लोहे और सन के बन्धन को मजबूत बंधन नहीं कहते; इन सभी से जवाहिरात, आभूषण, सन्तान और पत्नी-प्रेम का बंधन मजबूत होता है । ... १२

ज्ञानी पुरुष उस बंधन को, जो नीचे की तरफ लेजाने वाला है और खोलने में कठिन है, मजबूत कहते हैं; ऐसे बंधन को काट देने के बाद मनुष्य चिन्ताओं से मुक्त हो इच्छाओं और भोगों को पीछे छोड़ संसार को त्याग देते हैं । ... १३

वे, जो विषयों के गुलाम हैं, प्रवाह के साथ उसी तरह बहते हैं जिस तरह मकड़ी अपने बनाये हुए जाले की सहायता से नीचे दौड़ती है; इस बंधन को काटने के बाद ज्ञानी चिन्ताओं से मुक्त हो, इच्छाओं और ममता को पीछे छोड़ संसार को त्याग देते हैं । ... १४

भवसागर को पार करने की इच्छा रखने वाले, हे मनुष्य ! सामने की, पीछे की और बीच की तृष्णाओं को त्याग दे; यदि

तेरा मन विषय से सर्वथा मुक्त है तो तू जन्म और मरण के चक्र में प्रवेश नहीं करेगा । १५

यदि मनुष्य संशय में डूबा हुआ है, तीव्र राग वाला है, भोगों का शौकीन है; तो उसकी तृष्णा अधिक बढ़ती जाती है, और उसका बंधन मजबूत होता जाता है । ... १६

यदि मनुष्य संशयों को दूर करता जाता है और सदा चिन्ताशील है, अप्रिय भावनाओं पर विचार करता रहता है, वह सचमुच शैतान के बंधन को केवल हटायेगा ही नहीं बल्कि उसे काट डालेगा । ... १७

जो पूर्णता के पद पर पहुँच गया है, जो निर्भय होगया है, जो तृष्णा और पाप से रहित है, उसी ने जीवन के सब कांटों को निकाल दिया है यह उसका अंतिम शरीर होगा । १८

वह जो तृष्णा और ममता से रहित है, जो धर्म के शब्दों और उनके अर्थों को समझता है जो शब्द का पूर्वापर सम्बन्ध जानता है उसी का शरीर अन्तिम समझना चाहिये, और वही बड़ा बुद्धिमान और महात्मा कहलाता है । ... १९

‘मैंने सब पर विजय प्राप्त करली है, मैं सब जानता हूँ, जीवन की सभी अवस्थाओं में, मैं कलंक से मुक्त हूँ, मैंने सब त्याग कर दिया है और तृष्णा का नाश करने के कारण मैं स्वतन्त्र हूँ स्वयं यह सब कुछ सीखने के बाद मैं किसे उपदेश करूँ ।’ ... २०

धर्म का दान सब दानों से श्रेष्ठ है, धर्म की मिठास सब मिठाइयों से श्रेष्ठतम है, धर्म का आनन्द सब सुखों से बढ़कर है, तृष्णा का नाश सब दुःखों पर विजयश्री लाभ करता है । ... २१

भवसागर पार करने की इच्छा न रखने वाले मूर्खों को भोग नाश कर देते हैं; भोगों की प्यास के कारण मूर्ख अपने शत्रु आप बनकर अपना नाश कर लेते हैं । ... २२

घास-फूस उगने से खेती बरबाद होजाती है, मानवजाति विषय-विकार से तबाह होजाती है; इसलिये संयमी पुरुष को दिये हुये दान की बड़ी महिमा है । २३

घास-फूस उगने से खेती बरबाद होजाती है, मानवजाति द्वेष से तबाह होजाती है; इसलिये द्वेष न रखने वाले पुरुष को दिये हुये दान की बड़ी महिमा है । ... २४

घास-फूस उगने से खेती बरबाद होजाती है, मानवजाति अहंकार से तबाह होजाती है; इसलिये अहंकार रहित पुरुष को दिये हुये दान की बड़ी महिमा है । ... २५

घास-फूस उगने से खेती बरबाद होजाती है, मानवजाति कामातुरता से नष्ट होजाती है; इसलिये जितेन्द्रिय पुरुष को दिये हुये दान की बड़ी महिमा है ।' ... २६

पच्चीसवाँ प्रकरण

भिक्षु वर्ग

भगवान् बुद्धदेव जी के पास इक्ष्वाकु वंश के दो राजकुमार भिक्षु बनने के लिये आये । उस समय भगवान् ने जो उपदेश उन्हें दिया उसमें से चुने हुये वचन नीचे दिये जाते हैं:—

“आंख का संयम हितकारक है, कान का संयम मंगलकारी है, नाक का संयम शुभकारी है और जीभ का संयम सुखकर है ।
..... १

शरीर का संयम हितकारी है, बाणी का संयम मंगलकारी है, विचारों का संयम सुखकारी है, सब वस्तुओं में संयम कल्याणकारी है । जो भिक्षु सब वस्तुओं में संयम रखता है वह सब प्रकार के दुःखों से छूट जाता है ।
... २

भिक्षु उसे कहते हैं जो अपने हाथ, पांव और बाणी को वश में रखता है, जो भली प्रकार संयमी है, जो आत्मिक विचारों में आनन्द मानता है, जो स्थिर चित्त है और जो एकांतसेवी तथा संतोषी है ।
..... ३

जो भिक्षु अपने मुख (बाणी) को वश में रखता है, जो बुद्धिमत्ता तथा शांति से बोलता है, जो धर्म और उसके अर्थ की शिक्षा देता है उसके वचन मीठे होते हैं ।
..... ४

जो धर्म के अनुसार चलता है, धर्म में आनन्द मानता है, धर्म का मनन करता है, धर्म के अनुसार चलता है वह भिक्षु सत्य-धर्म से कभी नहीं हटेगा । ५

जो वस्तु भिक्षु को मिले उसका वह तिरस्कार कभी न करे, दूसरों के साथ कभी ईर्ष्या न करे: जो भिक्षु दूसरों के साथ ईर्ष्या करता है उसे मानसिक शांति कभी नहीं मिल सकती । ६

जो भिक्षु थोड़ी वस्तु मिलने पर भी उसका तिरस्कार नहीं करता, जिसका जीवन पवित्र है और जो आलसी नहीं है ऐसे भिक्षु की देवता भी स्तुति करेंगे । ७

जो भिक्षु अपने आप को नाम और रूप में नहीं समझता और जो नाशवान पदार्थों पर शोक नहीं करता वही सच्चा भिक्षु है । ८

जिस भिक्षु का आचरण दयापूर्ण है, जो बौद्ध-धर्म में आनन्द मानता है, वह भिक्षु सब संस्कारों के नाश होने से सुख और परम शान्ति रूप निर्वाण को प्राप्त होता है । ... ९

भिक्षु ! अपनी नौका को खाली कर । खाली होने से तेरी नौका शीघ्र चलेगी, विषय विकार और घृणा को दूर कर देने से तू निर्वाण पद को प्राप्त करेगा । १०

पांचों इन्द्रियों के विकारों को दूर कर, पांचों विकारों को त्याग कर, पांचों विकारों से ऊपर उठ । जो भिक्षु इन्द्रियों के

पांचों बंधनों से छूट गया है उसे ओघातिन्ना 'प्रवाह से सुरक्षित कहते हैं।' ... ११

ओ भिक्षु! मनन कर, प्रमादी मत बन । भोगों की ओर अपने मन के घोड़े मत दौड़ा ताकि तुम्हें अपने प्रमाद के कारण नरक की आग में जलते समय 'दुःख दुःख' न चिल्लाना पड़े । ... १२

ज्ञान के बिना ध्यान सम्भव नहीं, ध्यान बिना ज्ञान सम्भव नहीं; जिस के पास ज्ञान और ध्यान दोनों हैं वह निर्वाण के बिल्कुल निकट है । ... १३

जो भिक्षु विषय विकारों से रहित निर्मल शरीर (घर) में प्रवेश करता है, जिसका मन शांत है, वह जिस समय धर्म के मर्म का अनुभव करता है तो उसे अलौकिक आनंद मिलता है । १४

ज्यों ही वह पंचभौतिक शरीर के कारण और नाश पर विचार कर लेता है त्योंही उसे निर्वाण पद के अधिकारियों के बराबर आनंद और सुख मिलता है । १५

बुद्धिमान भिक्षु इस प्रकार आचरण आरम्भ करे:—इन्द्रियों का निग्रह, संतोष, धर्मानुसार संयम, पवित्र और अप्रमत्त जीवन वाले मित्रों का संग, सब के प्रति उदारता पूर्ण व्यवहार, अपने

कर्त्तव्यों में परिपूर्ण—इस प्रकार के जीवन व्यवहार से पूर्ण आनन्द मिलेगा और उस के दुःखों का अंत हो जायगा । ... १६

हे भिक्षुओ ! जैसे वसिका नामक पौदा अपने मुरझाये हुये फूलों का त्यागकर देता है इसी प्रकार मनुष्य को राग-द्वेष का त्याग करना चाहिये । ... १७

जिस भिक्षु ने अपने शरीर, ज्ञान और मनका संयम कर लिया है, जो स्थिर चित्त है, जिसने संसार की प्रलोभनाओं को त्याग दिया है वह शांत कहलाता है । ... १८

हे भिक्षुओ ! अपने पुरुषार्थ से अपने आप को चैतन्य कर, स्वयं अपनी परीक्षा कर, इस प्रकार सुरक्षित और अप्रमत्त होकर सुख से जीवन व्यतीत करो । ... १९

जैसे व्यापारी अच्छे घोड़े को क्राबू में रखता है, इसी प्रकार अनुभवी अपने आपको वश में रखे क्योंकि आत्मा का स्वामी आत्मा है, आत्मा का आश्रय आत्मा है । २०

आनन्द से पूर्ण, भगवान् बुद्ध के धर्म में मग्न, भिक्षु, कामनाओं से रहित शांति के धाम निर्वाणपद को प्राप्त होगा । २१

जो छोटी उम्र का भिक्षु होने पर भी बुद्ध के धर्म में पूर्ण मन लगाता है वह बादलों से मुक्त चन्द्रमा की तरह इस संसार को प्रकाशित करता है ।" ... २२

छब्बीसवाँ प्रकरण

ब्राह्मण वर्ग



जटा जूट सिर पर रखे हुये मुनिबालक विष्णुमित्र अपने पिता की आज्ञा से वन में यज्ञ के लिये समिधा लेने गया था। दीर्घकाय इस तपस्वी बालक ने जंगल में एक बौद्ध भिक्षु को बैठे हुये देखा। विष्णुमित्र ने कभी पहिले किसी बौद्ध भिक्षु को नहीं देखा था। हां, अपने पिता याज्ञिक हरिमित्र के मुख से गौतम बुद्ध की चर्चा अवश्य सुनी थी। भिक्षु को देखकर विष्णुमित्र कुछ विस्मित हुआ, और अपने मन में सोचने लगा, 'सिर मुड़ाये हुये पीत वस्त्र पहिने यह शान्त मूर्ति कौन है' ? भिक्षु अपने ध्यान में निमग्न था। विष्णुमित्र बड़ी श्रद्धा से उसके पास जा, प्रणाम कर, बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसको पता लगा कि जिस गौतम बुद्ध का नाम उसने अपने पिता के श्रीमुख से बार बार सुना है, और जिसकी कीर्ति आर्यवर्त के चारों ओर फैलने लगी है, उस महा मुनि बुद्ध का शिष्य यह भिक्षु है। भिक्षु उस बालक की विलक्षण मूर्ति को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। कुछ समय तक दोनों आपस में प्रेम पूर्वक वार्तालाप करते रहे। विष्णुमित्र के हृदय में भगवान बुद्ध के दर्शन करने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। दूसरे दिन, पिता की आज्ञा लेकर वह उस भिक्षु के साथ लयागत

महाराज के दर्शन करने के लिये चल पड़ा । कई दिन तक निरन्तर यात्रा करने के बाद वे धनकुबेर अनाथ पिण्डिका के बनवाये हुए प्रसिद्ध विहार में पहुंचे । यात्रा की तकान दूर कर वे पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने के लिये गये । भगवान की सौम्य मूर्ति उच्च आसन पर विराज रही थी और श्रोता लोग बड़ी श्रद्धा से उनका उपदेश सुन रहे थे । उस समय जो प्रसंग चल रहा था उसका रसास्वादन पाठकों को भगवान के अपने शब्दों में कराया जाता है:—

“हे ब्राह्मण ! विषय विकार के प्रवाह को वीरता से रोक और कामनाओं को दूर भगा । जब तुम्हें उत्पन्न हुई नाम रूप वाली वस्तुओं के नाश का कारण समझ में आजायगा तब तुम अनुत्पन्न वस्तु अर्थात् निर्वाण को जान लोगे । ... १

जिस समय ब्राह्मण ध्यान और संयम इन दो मार्गों में व्युत्पन्न हो जाता है तब उस ज्ञानसम्पन्न पुरुष के सब बंधन कट जाते हैं । ... २

जिस पुरुष के लिये न यह किनारा * न वह किनारा अर्थात् आर पार कुछ भी नहीं रहा, उस निर्भय और मुक्त पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३

* इन दो किनारों से मतलब अंदर और बाहर की इन्द्रियों से है, अर्थात् जिसे कर्म और ज्ञानेन्द्रियों से उत्पन्न हुए सुख दुःख की तरफ किसी प्रकार का राग-द्वेष नहीं है बड़ी ब्राह्मण्य है ।

जो विचारशील, निर्दोष, स्थिरचित्त कर्त्तव्य परायण, विषय विकार से रहित है और जिसने उच्चतम आदर्श की प्राप्ति कर ली है, निश्चय ही ऐसे पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ४

सूर्य्य दिन के समय देदीप्यमान होता है, और चन्द्रमा रात के समय चमकता है, योद्धा कवच में शोभायमान होता है, ब्राह्मण अपने ध्यान में तेजस्वी मालूम होता है; लेकिन बुद्ध दिन रात हर समय प्रकाशित रहता है । ... ५

जिसने पाप का त्याग कर दिया है, वह ब्राह्मण है; जो सम्भाव से चलता है वह श्रमण है; जिसने अपनी मलिनता को दूर कर दिया है वह प्रव्रजित (संन्यासी) कहलाता है । ६

किसी को ब्राह्मण के ऊपर हमला नहीं करना चाहिये, लेकिन किसी ब्राह्मण को हमला करने वाले के ऊपर दूट न पड़ना चाहिये । धिक्कार है उसको जो ब्राह्मण को मारे, उससे भी ज्यादा धिक्कार उस ब्राह्मण को है जो हमला करने वाले पर दूट पड़ता है । ... ७

यदि ब्राह्मण अपने मन को संसार के विषय भोगों से अलग रखे तो उसे कम लाभ नहीं होता; ज्यों ज्यों दूसरों को हानि पहुँचाने की इच्छा नष्ट होती जाती है त्यों त्यों दुःखों का अन्त होता जाता है । ... ८

उसी को मैं ब्राह्मण कहता हूँ जो शरीर, वाणी और मन से किसी का जी नहीं दुखाता, और जो उपरोक्त तीनों बातों में संयमी है । ... ६

जब एक बार मनुष्य, भगवान बुद्ध के बताये हुये मार्ग भली प्रकार समझ जाय, तो उसे बड़ी सावधानी से उसका उसी प्रकार पूजन (उसके अनुसार चलना चाहिये) करना चाहिये जैसे अग्निहोत्री ब्राह्मण यज्ञ की अग्नि को नमस्कार करता है । ... १०

मनुष्य अपने जटा-जूट, जन्म तथा गोत्र के कारण ब्राह्मण नहीं बन जाता, जिसमें सत्य और धर्म है, वही पवित्र है—वही ब्राह्मण है । ... ११

ओ मूर्ख ! जटा-जूट रखने से अथवा मृगचर्म धारण करने से क्या लाभ ? अन्दर तो तेरे तृष्णा रूपी गहन बन है, लेकिन बाहर को तू शुद्धि करता है । ... १२

जिसने मैले कुचैले कपड़े पहिने हों, जिसकी दुर्बलता के कारण नसें दिखाई पड़ती हों जो बन में अकेले रहकर ध्यान करता हो उसको मैं सचमुच ब्राह्मण कहता हूँ । ... १३

जन्म और अमुक माता पिता से उत्पन्न होने के कारण पुरुष ब्राह्मण नहीं होता । वह चाहे उद्धत् हो चाहे धनवान हो; लेकिन जो गरीब और सब प्रकार की मोह माया से मुक्त है उसे मैं निश्चय ही ब्राह्मण कहता हूँ । ... १४

जिसने सब प्रकार के बंधन काट दिये हैं, जो निर्भय है, जो स्वाधीन है और बंधन रहित है, सचमुच मैं उसी को ब्राह्मण कहता हूँ। ... १५

द्वेष रूपी डोरी, राग रूपी तस्मा, अश्रद्धा रूपी जंजीर और उसके साथ सम्बन्ध रखनेवाली दूसरी वस्तुयें, तथा जिसने अज्ञान रूपी अड़चन को तोड़ डाला है, निश्चय ही मैं उसे ब्राह्मण कहता हूँ। ... १६

जिसने किसी प्रकार का पाप नहीं किया, जो धमकी, बेड़ियों और मार को सहन कर लेता है, सहनशीलता रूपी बल जिसकी सेना है, उसी को मैं सचमुच ब्राह्मण कहता हूँ। १७

जो क्रोध रहित है, कर्त्तव्य परायण है, सद्गुणी है, तृष्णा रहित है, संयमी है, जिसका यह अन्तिम चोला (शरीर) है, उसी को मैं सचमुच ब्राह्मण कहता हूँ। ... १८

जैसे कमल के पत्ते पर जलबिन्दु नहीं ठहरता, और जैसे सुई की नोक पर सरसों का दाना नहीं टिकता, इसी प्रकार जो विषय सुख में लीन नहीं होता, उसी को मैं ब्राह्मण कहता हूँ। ... १९

जो यहां पर अपने दुःख का अंत जानता है ऐसे भार से मुक्त, विरक्त पुरुष को मैं सचमुच ब्राह्मण कहता हूँ। २०

जिसका ज्ञान गम्भीर है, जो धीमान् है, जो सार असार

जानता है, जिसने उच्च से उच्च वस्तु प्राप्त करली है, उसको मैं ब्राह्मण कहता हूँ । २१

जो गृहस्थी और भिक्षु दोनों से बिल्कुल अलग रहता है, जो घर घर भटकता नहीं, जो इच्छा रहित है, उसी को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । २२

जो निर्बल अथवा सबल किसी प्राणी को दण्ड नहीं देता, जो न स्वयं हत्या करता है और न हत्या का कारण ही बनता है, ऐसे मनुष्य को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... २३

जिसमें क्रोध और द्वेष, मान और ईर्ष्या इस प्रकार से अलग होगये हैं, जैसे सरसों का दाना सुई की नोक पर से अलग होजाता है, ऐसे मनुष्य को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । २४

जो सत्य, किन्तु हितकर और मधुर वचन बोलता है, जिनसे किसी का जी नहीं दुःखता, ऐसे मनुष्य को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । २५

जो इस संसार में उस वस्तु को नहीं लेता है जो उसको दी नहीं गई है चाहे वह वस्तु छोटी हो या बड़ी, दीर्घ हो या लघु और अच्छी हो या बुरी, ऐसे मनुष्य को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । २६

जिसे इस लोक तथा परलोक संबंधी कोई लालसा नहीं है, ऐसे वासना रहित विरक्त पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । २७

जो तृष्णा रहित है , जो सत्य को जानकर संशय रहित हो गया है और जिसे अमरत्व स्वरूप निर्वाण का यथार्थ ज्ञान है, ऐसे मनुष्य को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... २८

जो इस संसार में पुण्य और पाप के बंधन से परे है, जो शोक, पाप, और अशुद्धि इन तीनों से मुक्त है, ऐसे मनुष्य को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... २९

जो चांद की तरह निर्मल, शुद्ध, सुप्रसन्न, कलङ्क रहित और जो सांसारिक भोगों में बाँधने वाली आशा से रहित है, ऐसे मनुष्य को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३०

जिसने संसार के मोह रूपी कीचमय दुर्गम मार्ग को तय कर लिया है, जो इस भवसागर को पार कर परले किनारे पर पहुँच गया है जो विचारशील, निष्कपट, संशयरहित, आसक्ति रहित और संतोषी है, उसी को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३१

सब कामनाओं को त्याग कर, घर बार छोड़ कर, जो संन्यास ले लेता है ऐसे, कामदेवके नाश करने वाले, पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३२

सब तृष्णाओं को त्याग कर, घर बार छोड़ कर, जो पुरुष संन्यास लेता है, ऐसे तृष्णाओं को नाश करने वाले पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३३

जिसने मनुष्य सम्बंधी बंधनों को तोड़ दिया है, जिसने देवताओं सम्बंधी बंधनों को भी तोड़ दिया है अर्थात् जिसने

सब प्रकार के बंधन तोड़ दिये हैं, ऐसे पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३४

जिसने सुख अथवा दुःख देने वाले पदार्थों का त्याग कर दिया है; जो शांत है, जिसने आवागमन के कारणों को मिटा दिया है जिस वीर ने सब लोकों को जीत लिया है; ऐसे पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ३५

जो चारों ओर प्राणियों की उत्पत्ति तथा उनका नाश देखता है, जो बंधन से मुक्त है, जो अच्छे मार्ग में जाने वाला है और जो जागृत (बुद्ध) है, ऐसे मनुष्य को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ३६

देवता, गंधर्व और मनुष्य जिसकी गति को नहीं जान सकते, जिसके विषय विकार मिट गये हैं और जो अर्हत अथवा बुद्ध है, ऐसे पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३७

जो आगे, पीछे, और बीच में पड़ी हुई किसी भी वस्तु को अपनी नहीं कहता, जो गरीब है, और जो आसक्ति रहित है, ऐसे पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३८

जो पुरुषार्थी, श्रेष्ठ, शूर, महर्षि, विजेता, निष्कामी, सिद्ध अथवा बुद्ध है, ऐसे पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ३९

जो अपने पिछले जन्मों के विषय में जानता है, जो स्वर्ग और नरक को देख सकता है जिसका जन्म-मरण का चक्र पूरा हो गया है, जो सम्पूर्ण ज्ञानमान है, जो महर्षि है, और जो सब प्रकार से पूर्ण है, ऐसे पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ । ... ४०

अमूल्य रत्न !

अमूल्य रत्न !!

संजीवनी बूटी अर्थात् वीर्य-रक्षा

अपने ढंग का अनूठा ग्रन्थ है। आरोग्यता के मूलतत्वों-ईश्वर पर विश्वास, प्राणायाम, वीर्य-रक्षा और व्यायाम की व्याख्या इस पुस्तक में सरल भाषा में की गई है। जिस प्राणायाम से अमरीका के लोग अपनी शारीरिक अवस्था सुधारते हैं, जिसके द्वारा वे लोग अपनी बीमारियों का इलाज करते हैं, उसके सीधे साधे उपाय इस पुस्तक में बतलाये गये हैं। वीर्य जैसे अमूल्य रत्न की रक्षा कैसे हो सकती है तथा तत्सम्बन्धी व्याधियों का स्वाभाविक इलाज क्या हो सकता है ऐसी आवश्यक बातों पर प्रकाश डालने की चेष्टा इस पुस्तक में की गई है। इस बात के बताने की विशेष आवश्यकता नहीं है कि औषधियों के विशेष व्यवहार की अपेक्षा प्राकृतिक नियमों के अनुकूल चलना स्वास्थ्य के लिये बड़ा लाभकारी है। इसलिये ऐसे ही स्वास्थ्यरक्षा के उपयोगी प्राकृतिक नियमों का वर्णन इस पुस्तक में विशदरूप से किया गया है। इसलिये इस विषय की “संजीवनी बूटी” से उत्तम पुस्तक आप कहीं नहीं पायेंगे—श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक की कुल पुस्तकों में यह पुस्तक सर्वोत्तम है। प्रत्येक गृह में इस पुस्तक की एक एक प्रति अवश्य रहनी चाहिये। मूल्य केवल ॥)

शिक्षा का आदर्श

उत्तर भारत में हजारों ही मनुष्य ऐसे होंगे जिन्होंने श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक का यह प्रसिद्ध व्याख्यान सुना होगा। जब तीन दिन तक लगातार श्री स्वामी जी इस मार्मिक विषय पर अपने विचार प्रकट करते हैं तो श्रोता लोग सुमकर मुग्ध हो जाते हैं और वह यही चाहते हैं कि ऐसे शिक्षाप्रद एवं प्रभावशाली व्याख्यान

भारत के कोने कोने में हों। अपने प्रेमी भक्तों के अनुरोध से श्री स्वामी जी ने इस व्याख्यान को पुस्तकाकार छपवा दिया है। इस व्याख्यान की रोचकता और लोकप्रियता इस से ही विदित होती है कि तीन महीने के भीतर ही भीतर इसकी २००० प्रतियां हाथों हाथ बिक गईं। विद्वानों ने मुक्ककण्ठ से इसकी सराहना और प्रशंसा की है। एक सज्जन तो इस व्याख्यान को पढ़कर इतने आनन्दित हुये कि उन्होंने प्रेम में मग्न होकर (१००) का नोट श्री स्वामी जी महाराज को भेंट कर दिया। जो इसे पढ़ता है वही इसका प्रचारक बन जाता है। भारत की वर्तमान शिक्षा सम्बन्धी कठिन समस्या पर इस पुस्तक में बड़ी गम्भीरता से विचार किया गया है। कोई घर इस अमूल्य रत्न से खाली न रहना चाहिये। सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि वे अपने प्रेमियों तथा इष्ट मित्रों में इसका प्रचार बढ़ावें। अध्यापकों, गृहस्थों, विद्यार्थियों तथा सर्व सम्प्रदाय के लोगों को इसे मंगा कर पढ़ना चाहिये। सुन्दर टाइप में तथा चिकने (Glazed) कागज़ पर छपी इस पुस्तक का मूल्य १-) मात्र है।

मेरी कैलाश यात्रा—‘सत्य-ग्रन्थ-माला’ की यह आठवीं संख्या हमारे प्रेमी पाठकों का आत्हाद बढ़ाने वाली है। हिन्दू होकर जिसने ‘कैलाश दर्शन’ नहीं किये वास्तव में उसे मनुष्य जन्म की अनेक विभूतियों में से एक इस विभूति से भी वञ्चित ही रहा समझना चाहिये। यदि आप वस्तुतः श्री विश्वनाथ जी के प्राकृतिक मन्दिर के भव्य दर्शन करना चाहते हैं तो इस पुस्तक को मंगाकर अवश्य पढ़िये। जून सन् १९१५ में श्री स्वामी जी महाराज पुनीत हिमालय पर्वत के १८३०० फीट ऊँचे हिमाच्छादित भवन को लांघ कर श्री कैलाश जी के दर्शन करने गये थे। यदि आप मानसरोवर के जगत्प्रसिद्ध राज-हंसों की मोहिनी सूरत, उनका स्वर्गीय आलाप तथा तिब्बतियों की रहन सहन इत्यादि बातों को जानना चाहते हों तो इस पुस्तक द्वारा उसका सविस्तर वृत्तांत आप को विदित हो जायगा। जिस प्रकार श्री

स्वामी जी लिखित अमरीका दिग्दर्शन, अमरीका भ्रमण, अमरीका पथ-प्रदर्शक तथा अमरीकाके निर्धन विद्यार्थी, प्रभृति पुस्तकों को पढ़कर आप मुग्ध हुए हैं वैसे ही इस पुस्तक को भी पढ़कर आप गद्गद् हो जावेंगे। मूल्य प्रति पुस्तक ॥१)

हमारी सदियों की गुलामी के कारण—इस पुस्तक में श्री स्वामी जी ने हमारी अवनति के वास्तविक कारणों को बड़ी ही छानबीन के साथ वर्णन किया है और साथ ही वे उपाय भी बतलाए हैं, जिनसे जाति का अभ्युत्थान हो सकता है। पुस्तक देखने योग्य है। मूल्य केवल =) अथवा =) के डाक टिकट भेज कर मंगाइये।

जातीय शिक्षा—यह छोटी सी पुस्तक शिक्षक का काम देती है 'भारतीय' कौन कौन कहला सकता है तथा भारतियों की जातीय शिक्षा कैसी होनी चाहिये? इन सब प्रश्नों का उत्तर लेखक ने बड़ी ही खूबी के साथ दिया है। मूल्य केवल -)

असहयोग—ऐसा कौन भारतवासी है जो 'असहयोग' के महामंत्रों की महान और मुद्दों में भी जान डाल देने वाली शक्ति से परिचित न होगा। जो भारत के सरी विदेशी शासन की कूट-नीति के जाल में फंसकर सर्वथा अशक्त और परवश हो रहा था, असहयोग आन्दोलन के प्रभाव से उसके बंधन सर्वथैव ढीले पड़ गये हैं और उसे ध्रुव विश्वास हो गया है कि स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए दूसरों के सामने गिड़गिड़ाना न पड़ेगा प्रत्युत इस असहयोग के महा मंत्र द्वारा वह स्वयमेव स्वाधीनता प्राप्त करने को समर्थ होगा। इसलिए प्रत्येक देश-प्रेमी का कर्त्तव्य है कि इस असहयोग के आदर्श का स्वरूप समझाने वाले और नूतनप्रायः हृदय में नूतन जागृति का संचार करने वाले श्री स्वामी सत्यदेव जी महाराज के उपयुक्त शीर्षक व्याख्यानों को पढ़ें और जनता में उसका खूब प्रचार करें। श्री स्वामी जी महाराज के विषय में हम अधिक कुछ न कह केवल यह बात बतलाना ही अलम समझते हैं कि जिन महापुरुषों के सिंहनाद से शताब्दियों से

सोया हुआ भारत आज जाग उठा है उन्हीं में से श्री स्वामी जी भी एक मुख्य पुरुष हैं। इसलिये यह पुस्तक कैसी ओजस्वला तथा निर्भीकता के साथ लिखी गई है इसका स्वयं अनुमान करें। मूल्य केवल ३)

राजसत्ता—यह पुस्तक स्वर्गीय श्री हरनारायण जी आपटे महोदय की उपर्युक्त नाम की पुस्तक का अनुवाद है और इसके अनुवादक हैं हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक 'मानव-सन्तति-शास्त्र' आदि ग्रन्थों के रचियता मुंशी हीरालाल जी जालोरी। पुस्तक १३ प्रकरणों में विभक्त है जिनमें 'समाज-विकास' और 'राजसत्ता' के तत्वों का भली भांति विवेचन किया गया है और प्रत्येक विषय का ऐसी उत्तमता से वर्णन किया है जो देखने से ही सम्बन्ध रखता है। मूल्य ॥)

मराठों का उत्कर्ष—जातियों तथा देशों के उत्थान और पतन के कारणों का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक स्वदेश और स्वजाति प्रेमी का परम कर्त्तव्य है क्योंकि उन्नति के अभिलाषी जन देश पतन के कारणों का परित्याग तथा उत्थान के कारणीभूत कार्यों को ग्रहण करके वास्तविक उन्नति की ओर अग्रसर हुआ करते हैं। जिन कारणों से भारत में हिन्दुओं के आधिपत्य का नाश और मुगलों के साम्राज्य की समाप्ति हुई उन्हीं कारणों से अत्यन्त क्षिप्रगति के साथ उन्नति के शिखर पर चढ़ने वाली तथा अपनी विजयपताका को देहली के किले की दीवारों पर फहरा देने वाली मराठा जाति का भी थोड़े ही समय में उतना पतन होगया कि फिर उसमें सिर उठाने की शक्ति सर्वथा लोप हुई। परलोक वासी विचारपति महादेव गोविंद रानाडे ने अंग्रेजी में *Rise of the Mahratta Power* नामक मराठों का जो इतिहास लिखा है उसी का यह हिन्दी अनुवाद है। अधिक क्या लिखें पुस्तक पढ़ने योग्य है और इसकी उपयोगिता इससे ही भली भांति प्रकट होती है कि इसे अखिलभारत वर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन गयाग की मध्यमा परीक्षा की पाठ्य पुस्तकों में नियत किया गया है। मूल्य केवल १॥=)

सुन्दर साहित्य !

राष्ट्रीय सन्देश !!

सत्य-ग्रन्थ-माला

जगत्प्रसिद्ध परिव्राजक श्री स्वामी सत्यदेवजी महाराज ने अब फिर अपनी जादू भरी और मुरदों में भी जान डाल देने वाली लेखनी को उठाया है और सत्य-ग्रन्थ-माला के नाम से अनेक राष्ट्रीय उपयोगी ग्रन्थों का लिखना प्रारम्भ कर दिया है । इस ग्रन्थमाला की नूतन पुस्तकें अभी प्रकाशित हुई हैं

हमारी सदियों की गुलामी के कारण मू० =), असह-योग मू० =) और पूर्व प्रकाशित निम्न पुस्तकें विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं—

अमरीका पथ प्रदर्शक ।=) अमरीका दिग्दर्शन ।।=)
अमरीका के विद्यार्थी ।) अमरीका भ्रमण ।।=) मनुष्य के अधि-
कार ।=) सत्य निबन्धावली ।।=) शिक्षा का आदर्श ।=) कैलाश
यात्रा ।।) राजर्षि भीष्म ।) आश्चर्य-जनक घंटी ।=) राष्ट्रीय
सन्ध्या)।। हिन्दी का सन्देश <) सञ्जीवनी बूटी ।।)

इनके अतिरिक्त श्रीस्वामी जी महाराज के लिखे अनेक ग्रन्थ इस समय प्रेस में छप रहे हैं और बहुत से शीघ्र ही प्रेस में दिये जाने वाले हैं इस लिये जो महाशय 'सत्य-ग्रन्थ-माला' के स्थायी ग्राहक बनना चाहें वे १) भेजकर अपना नाम 'माला' की ग्राहक श्रेणी में दर्ज करालें—जैसे २ पुस्तकें छपती जावेंगी तीन चौथाई मूल्य पर उनके पास पहुँचती रहेंगी ।

सर्व प्रकार का पत्र व्यवहार इस पते से कीजिये—

मैनेजर—दी लवानियाँ पब्लिशिंग हाउस,

आगरा, (यू० पी०), (इण्डिया) .

दी लवानिया पब्लिशिंग हाउस आगरा

यह कर्म—

- १—राष्ट्रीय साहित्य छापने के लिये खुला है।
- २—विद्वान लेखकों के उपयोगी ग्रन्थ छपवाती है।
- ३—हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती पुस्तकों की
विक्री का प्रबन्ध करेगी।
- ४—सत्य-ग्रन्थ-माला के सुन्दर सुलभ संस्करण
छापेगी।
- ५—१) रु० भेजकर जो सज्जन स्थायी ग्राहक
बनते हैं उन्हें 'सत्य-ग्रन्थ-माला' की पुस्तकें
तीन चौथाई मूल्य पर दी जाती हैं।

विनीत—

मैनेजर—दी लवानिया पब्लिशिंग हाउस आगरा

